भारतीय टिकटों की कहानी

[स्वाधीन भारत के डाक टिकट]

गजराज जैन

बाल बुक बैंक
१८ माडल बस्ती, नई दिल्ली–५

मेरी पुस्तक और मेरा नाम

____

मूल्य : एक रुपया अस्सी पैसे (१.८०)

कापी राइट : बाल बुक बैंक, नई दिल्ली-५
प्रथम संस्करण : १९६६
पुनर्मुद्रण : १९७०
आवरण-शिल्पी : केवल कृष्ण सीकरी
मुद्रक : हितसरन अग्रवाल, सरस्वती प्रेस, मथुरा

सूची

समर्पित

देश के हर गाँव और
नगर में निवास करने वाले अरविन्द
और अशोक जैसे बाल संग्राहियों को—
जिनके जिज्ञासा-भरे पत्र मुझे प्रति-
दिन आते रहते हैं।

—लेखक



हमारे डाक-टिकट

डाक- किट संग्रह का शौक (फिलातली) अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग और सद्भाव में वृद्धि करने का एक अत्यन्त प्रभावशाली साधन माना जाता है। रंग, जाति और देश की कृत्रिम सीमाओं को भूलकर जब पत्र-मित्र पत्राचार करते हैं तो उनमें न केवल उदारता एवं सहनशीलता का भाव ही उत्पन्न होता है, किन्तु विभिन्न देशों की सभ्यता, संस्कृति, इतिहास, भूगोल, राजनीति आदि का ज्ञान भी उन्हें अनायास ही हो जाता है। इस प्रकार जीवन में सफलता के लिए जिस सामान्य ज्ञान की आवश्यकता होती है उसको एक डाक-टिकट-संग्रही सहज ही प्राप्त कर लेता है।

प्रत्येक देश का डाक-विभाग भी इस बारे में बड़ी सावधानी बरतता है कि उसके द्वारा जारी किए जाने वाले डाक-टिकटों पर अंकित डिजाइनें ऐसी हों जिनसे उस देश के इतिहास, उद्योग-धन्धों, पशुधन, वन-सम्पदा एवं अन्य लक्षणों का सहज ही आभास मिल जाए। इस दृष्टि से भारतीय डाक-तार विभाग ने स्वतन्त्रता के

पश्चात् उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है।

सन् १८५४ से १९४६ तक हमारी डाक-व्यवस्था ब्रिटिश शासकों के हाथ में थी इसलिए इस अवधि में, ब्रिटिश शासकों के चित्र और उनके द्वारा बनाई गई कुछ भारतीय इमारतों के अतिरिक्त डाक-टिकटों पर और कुछ अंकित नहीं हो पाया। स्वतन्त्रता के पश्चात् हमारे डाक-तार विभाग को अवसर मिला कि वह इस देश की परम्पराओं व रीति-नीति के अनुसार अपने डाक-टिकटों के डिजाइन चुने। भारतीय डाक-तार विभाग यह कर्तव्य निभाने में कहाँ तक सफल हो सका है इसका अनुमान उसके द्वारा प्रकाशित विविध डाक-टिकटों द्वारा हो सकता है, जिनका क्रमबद्ध विवरण प्रस्तुत करना ही इस पुस्तक का उद्देश्य है।

प्रारम्भ से ही बच्चों को डाक-टिकट संग्रह के शौक की ओर प्रेरित करना और संगृहीत प्रत्येक टिकट के पीछे छिपी कहानी को जानने की जिज्ञासा उत्पन्न करना, प्रत्येक समझदार अभिभावक एवं अध्यापक का कर्तव्य है। तब वे पाएँगे कि उनके बच्चों ने थोड़े-से ही समय में देश और विदेश के बारे में कितना कुछ जान लिया है। उदाहरणार्थ यदि एक किशोर केवल आजादी के बाद निकले भारतीय टिकटों की ही पूरी जानकारी प्राप्त कर ले तो उसे देश-विदेश के ८० से अधिक महापुरुषों के बारे में और ७० से अधिक राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व के पर्वों, संस्थाओं एवं सम्मेलनों के बारे में जानकारी हो जाएगी। फिर इस ज्ञान में हर नये टिकट के साथ वृद्धि होती जाएगी। यदि इस लक्ष्य को ध्यान में न रखकर केवल इसे रंग-बिरंगी चिप्पियों का संग्रह-मात्र मान लिया जाए तो उम्र बढ़ने के साथ यह शौक स्वयं समाप्त हो जाएगा।

डाक-टिकट संग्रह क्यों किया जाए, कैसे किया जाए, किन टिकटों का किया जाए आदि प्रश्नों का उत्तर तो अन्यत्र विस्तार से

दिया गया है ।[1] यहाँ तो भारतीय डाक-टिकटों के संग्रहकर्ताओं को कुछ प्रारंभिक जानकारी दे देना ही पर्याप्त होगा। भारतीय टिकटों के संग्रहकर्ताओं को सर्वप्रथम अब तक प्रकाशित टिकटों की सूची प्राप्त करनी चाहिए। इसके अनन्तर वे एक ऐसा खुले पन्नों वाला एलबम बनाएँ जिसमें प्रकाशन की तारीख के क्रम से टिकट लगाए जा सकें। टिकटों के ऊपर प्रकाशन का अवसर व दिनांक और नीचे रंग, जलचिह्न, छिद्रण-व्यस्था व गिबन्स सूचीपत्र संख्या लिखी जानी चाहिए। वैसे अब ऐसे एलबम निकल गए हैं जिनमें यह सब छपा-छपाया तैयार होता है और बीच में उस टिकट का चित्र भी होता है जिसपर आप अपना टिकट प्राप्त कर चिपका सकते हैं। ऐसा ही एक उपयोगी एलबम बम्बई के ए० एच० दलाल ने निकाला है, जिसका मूल्य भी १५½ रुपये मात्र है।

सावधानी रखिए कि किसी भी टिकट को कभी भी लेई या गोंद से पक्का न चिपकाएँ। इस काम के लिए बाजार से प्राप्त होने वाली चिप्पियों का ही प्रयोग किया जाना चाहिए। इसका लाभ आप समय पर स्वयं समझ जाएँगे। संग्रह का प्रारंभ सदैव उल्टी ओर से करना चाहिए क्योंकि नये टिकट सरलता व शीघ्रता से मिल जाते हैं जब कि पुराने टिकट बहुत कठिनाई से। जैसे, भारतीय टिकटों के संग्राहक को सर्वप्रथम १९६८ के टिकट एकत्र करने चाहिए, फिर ६७, फिर ६६ और इसी प्रकार पीछे की ओर बढ़ते जाना चाहिए। हो सकता है कि हमें एकसाथ भिन्न-भिन्न वर्षों में प्रकाशित टिकट प्राप्त हो जाएँ। ऐसी स्थिति में इस पुस्तक की सहायता से प्रत्येक टिकट के लिए पहले से ही स्थान निश्चित कर लिया जाए और जब वह मिल जाए तब उसे उसके निर्धारित स्थान पर लगा

१. 'डाक-टिकट संग्रह क्यों और कैसे ?' लेखक द्वारा शीघ्र प्रकाश्य पुस्तक

दिया जाए। ध्यान रखिए, बिना किसी व्यवस्था व योजना के एलबम में टिकट चिपका देना समय, श्रम और धन का अपव्यय-मात्र है।

भारतीय डाक-टिकटों के संग्रहण का एक दूसरा तरीका 'विषयानुसार संग्रहण' भी हो सकता है, परन्तु इसके लिए एलबम स्वयं ही तैयार करना होगा। उसके अलग-अलग पृष्ठों पर आकार और विषय दोनों को ध्यान में रखते हुए खाने खींचने होंगे। फिर प्रत्येक पन्ने पर उस विषय का शीर्षक लगाना होगा। जैसे–भारतीय स्वतन्त्रता दिवस, बाल दिवस, संत कविमाला, पशुमाला, महापुरुषों की जयन्तियाँ, अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन, राष्ट्रीय पर्व आदि। वास्तव में यह तरीका बड़ी आयु के बच्चों या युवकों के लिए ही है, जिनमें विषय को समझने की पर्याप्त सूझबूझ और लगन होती है।

आजादी के बाद प्रकाशित भारतीय टिकटों को हम तीन भागों में बाँट सकते हैं—

(१) सामान्य नियत टिकट-मालाएँ—ये दैनिक व्यवहार के लिए जारी की जाने वाली टिकट-मालाएँ होती हैं, जिनमें देश की डाक दरों के अनुकूल सभी मूल्य वर्ग के टिकट होते हैं। ये वर्षों तक चलती रहती हैं। भारत में अब तक ऐसी ४ मालाएँ जारी की जा चुकी हैं जिनमें कुल मिलाकर ६८ टिकट हैं।

(२) विशेष टिकट—ऐसे टिकट किसी महापुरुष की जन्म-तिथि या निधन-तिथि पर और किसी राष्ट्रीय अथवा अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व के समारोह, सम्मेलन या संस्था की स्मृति में जारी किए जाते हैं। वास्तव में ऐसे टिकट ही संग्राहियों के लिए सर्वाधिक आकर्षण का विषय होते हैं। इन टिकटों के साथ ही प्रत्येक अवसर पर विशेष प्रकार के प्रथम दिवसीय लिफाफे भी निकाले जाते हैं, जिनपर उस दिन की विशेष डाक-मुहर भी लगाई जाती है। बहुत-से लोग केवल

ऐसे विशेष लिफाफों का ही संग्रह करते हैं। परन्तु ये सब जगह उपलब्ध न होने के कारण अधिकांश संग्रहकर्ताओं को डाक-टिकटों से ही संतोष करना पड़ता है। अब तो डाक-तार विभाग की कृपा से बम्बई, दिल्ली, मद्रास और कलकत्ता के बड़े डाकघरों में ऐसी व्यवस्था हो गई है जहाँ ५०) रुपया जमा करा देने पर घर बैठे नये टिकट, प्रथम दिवसीय आवरण, प्रचार-पुस्तिका आदि प्राप्त हो सकते हैं। स्वतन्त्रता के पश्चात् १९६७ के अन्त तक कुल १८५ विशेष टिकट जारी किए जा चुके हैं, जिनका वर्णन इस पुस्तक में विस्तार से दिया गया है।

(३) राजकीय टिकट मालाएँ—सरकारी कामकाज के लिए SERVICE (सर्विस) शब्द से अंकित टिकट निकाले जाते हैं, जो डाकखानों में नहीं बेचे जाते, किन्तु सरकारी कार्यालयों को सरकारी खजानों से सीधे भेजे जाते हैं। अब तक प्रकाशित ऐसी तीनों मालाओं का वर्णन तीसरे अध्याय में किया गया है।

प्रारंभिक संग्रहकर्ताओं को टिकटों के तकनीकी विवरण की कोई चिन्ता नहीं होती, परन्तु विशेषज्ञ हर टिकट के रंग, जलचिह्न, छिद्रण-व्यवस्था, मुद्रण-प्रणाली आदि का भी पूर्ण विवरण जानना चाहता है। ऐसे व्यक्तियों के लिए भारतीय डाक-टिकटों की तकनीकी जानकारी संक्षेप में यहाँ दी जा रही है।

(१) महात्मा गाँधी (१९४८) के डाक टिकटों के अलावा सभी भारतीय डाक-टिकट सुरक्षा मुद्रणालय, नासिक में छापे गए हैं।

(२) ३० अप्रेल, १९५८ तक सभी टिकट ब्रिटिश काल से चले आते हुए बहुसंख्यक तारों वाले जलचिह्न-युक्त कागज पर छपते रहे, किन्तु बाद में बहुसंख्यक अशोक स्तम्भ वाला जलचिन्ह-युक्त कागज काम में लिया जाने लगा। नवम्बर, १९६४ से विशेष टिकटों को छापने के लिए बिना जलचिह्न वाला कागज ही काम में लिया

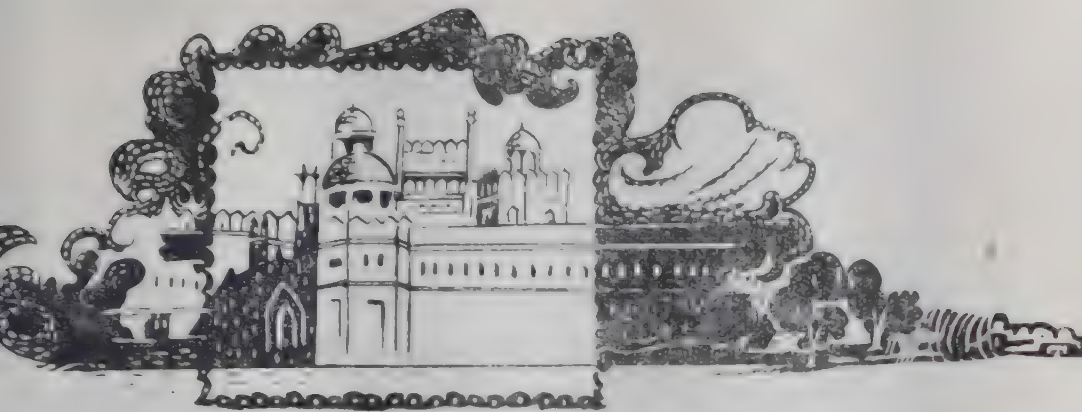
जाने लगा है।

(३) छिद्रण-व्यवस्था की दृष्टि से इन टिकटों की छिद्रण व्यवस्था १३ × १४½, १४ × १३½, १४ × १४½, १४, १३½, १३ आदि के विभिन्न रूप हैं।

(४) १९५१ तक टिकटों की मुद्रण-प्रणाली ऑफसेट-लिथ रही, किन्तु १९५२ से संसार में सर्वाधिक मान्य फोटोग्रेव्योर मुद्रण प्रणाली को अपना लिया गया।

(५) भारतीय टिकट अधिकतर इकरंगे या दुरंगे होते हैं परन्तु अब बहुरंगी मुद्रण-यन्त्र मंगा लिया गया है, जिसके प्रारं होते ही हमारे टिकट अन्य कई देशों के टिकटों की तरह अने आकर्षक रंगों में छपा करेंगे।





नियत टिकट-मालाएँ

समय-समय पर डाक-तार विभाग नए टिकट जारी करता रहता है। ये विशेष टिकट या तो किसी महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक दिवस की स्मृति में निकाले जाते हैं या किसी महापुरुष की स्मृति में। बहुत कम संख्या (२० लाख से २५ लाख प्रत्येक) में छापे जाने के कारण बड़े-बड़े शहरों के डाकखानों द्वारा ही ये बेचे जाते हैं और दो-तीन दिन में ही इनकी बिक्री समाप्त हो जाती है। परन्तु दैनिक कामों के लिए तो हमें लाखों नहीं, करोड़ों डाक-टिकटों की आवश्यकता होती है। इसलिए विशेष डाक-टिकटों के अलावा नियमित रूप से सदा मिलने वाले 'नियत डाक-टिकट' भी जारी किए जाते हैं, जो देश के छोटे से छोटे डाकखाने से भी मिल जाते हैं।

आजादी के पहले महारानी विक्टोरिया, सम्राट एडवर्ड, जार्ज पंचम, जार्ज षष्ठ की मुखाकृति वाली टिकटमालाएँ प्रचलित थीं। आजादी के बाद धीरे-धीरे इनका प्रचलन बन्द कर दिया गया और नई नियत मालाएँ शुरू की गईं। सन् १९६८ तक ऐसी कुल ४ टिकट-मालाएँ निकाली जा चुकी हैं।

प्रथम नियत टिकट-माला

(पुरातत्त्व माला, १६४६)

आजादी की दूसरी वर्षगाँठ पर १५ अगस्त, १६४६ को आजाद भारत की प्रथम नियत टिकट-माला जारी की गई। भारतीय मूर्तिकला एवं भवन-निर्माण कला के सुन्दर नमूनों वाली इस माला को 'पुरातत्त्व माला' के नाम से जाना जाता है। इस माला में ३ पाई से लेकर १५ रुपये तक के कुल १७ टिकट जारी किए गए हैं, जिनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

(१) इस माला का सबसे पहला टिकट १ पैसे (तीन पाई) का है। सलेटी रंग में छपे इस टिकट पर विश्वप्रसिद्ध अजन्ता गुफाओं का एक भित्तिचित्र हस्ती अंकित किया गया है।

(२) दूसरा टिकट दो पैसे (छः पाई) का है और लाल भूरे रंग में छापा गया है। इसपर कोणार्क (उड़ीसा) के जगत्प्रसिद्ध सूर्यमन्दिर स्थित घोड़े की मूर्ति का चित्र अंकित है।

(३) तीसरा टिकट तीन पैसे (नौ पाई) मूल्य का है। हरे रंग में छपे इस टिकट पर बम्बई की एलिफेण्टा गुफाओं में स्थित त्रिमूर्ति शिव का चित्र अंकित है।

(४) चौथा टिकट एक आने मूल्य का है और फिरोजी रंग में छापा गया है। इसपर महोबा के 'बोधिसत्त्व सिद्धानन्द लोकेश्वर' की मूर्ति अंकित है। भूल से इसपर मूर्ति का चित्र गलत छपा था, जो कि १५ जुलाई, १६५० को ऐसा ही एक नया टिकट जारी कर ठीक कर दिया गया।

(५) पाँचवाँ टिकट २ आने का है और लाल रंग में छापा गया है। इसपर मद्रास राज्य चित्तूर जिले के तिरुवेलंगडू स्थित शिव की ताण्डव करती हुई कांस्य मूर्ति का चित्र अंकित है।

(६) छठा टिकट २½ आने मूल्य का है और भूरे लाल रंग में छापा गया है। यह टिकट इस माला में शुरू में नहीं था, किन्तु बाद में ३० अप्रेल, १९५१ को शामिल किया गया। इसपर ३½ आने वाले टिकट पर अंकित बुद्धगया मन्दिर का ही चित्र छापा गया है।

(७) सातवाँ टिकट ३ आने मूल्य का है जिसे गहरे नारंगी रंग में छापा गया है। इसपर साँची के बुद्ध स्तूप के पूर्वी द्वार का चित्र अंकित है।

(८) आठवाँ टिकट ३½ आने मूल्य का है जिसे गहरे नीले रंग में छापा गया है। इसपर बुद्धगया स्थित मन्दिर का चित्र अंकित है।

(९) नौवाँ टिकट ४ आने मूल्य का है। भूरे लाल रंग में छपे इस टिकट पर भुवनेश्वर स्थित प्रसिद्ध लिंगराज मन्दिर का चित्र अंकित है। बाद में २½ आने मूल्य के टिकट को इसी रंग में छापे जाने के कारण चार आने वाले टिकट का रंग बदलकर ३० अप्रेल, ५१ से गहरा नीला कर दिया। इस प्रकार यह टिकट दो भिन्न रंगों में मिलता है।

(१०) छः आने मूल्य वाला यह टिकट बैंगनी रंग में छापा गया। इसपर बीजापुर के गोलगुंबद का चित्र अंकित है, जोकि मुहम्मद आदिलशाह की क़ब्र पर बना हुआ है।

(११) आठ आने मूल्य के इस टिकट का रंग हल्का हरा है। इसपर खजुराहो स्थित कंदर्प महादेव के मन्दिर का चित्र अंकित है।

(१२) बारह आने वाला टिकट समुद्री नीले रंग का है। इसपर अमृतसर के प्रसिद्ध स्वर्ण मन्दिर का चित्र मुद्रित है।

(१३) एक रुपये मूल्य का टिकट गहरे हरे और बैंगनी रंग में छापा गया। इसपर चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) स्थित विजयस्तंभ

का चित्र अंकित है।

(१४) दो रुपये वाला टिकट बैंगनी और लाल रंग में छापा गया है, जिसपर दिल्ली के सुप्रसिद्ध लालकिले का चित्र अंकित है।

(१५) पाँच रुपये वाले टिकट का रंग लाल, भूरा और हरा है। इसपर जगत्प्रसिद्ध ताजमहल का चित्र अंकित है।

(१६) दस रुपये वाला टिकट गहरे नीले एवं भूरे लाल रंग का है। इसपर दिल्ली की कुतुबमीनार का चित्र है।

(१७) इस माला का अंतिम टिकट १५ रुपये मूल्य का है और लाल तथा भूरे रंग में छापा गया है। इसपर पालीतणा स्थित शत्रुंजय जैन मन्दिर का चित्र अंकित है।

पुरातत्त्व माला के टिकट देश-बिदेश में बहुत लोकप्रिय हुए। इनमें से १ रुपये मूल्य तक के टिकट, कोरिया में उस समय संरक्षा-कार्य में लगी भारतीय सेनाओं के उपयोग के लिए भी, भेजे गए। इनपर नागरी लिपि में 'भारतीय संरक्षा कटक कोरिया' अधिमुद्रित किया गया। इसके अतिरिक्त इनमें से ३ पाई, १ आना, २ आना, ८ आना और १२ आने मूल्यवाले ५ टिकट उस समय अन्तर्राष्ट्रीय आयोग के उपयोग के लिए कम्बोडिया, लाओस और वियतनाम में जारी किए गए।

द्वितीय नियत टिकट-माला

(पंचवर्षीय योजना माला, १९५५)

पुरातत्त्व माला के साढ़े पाँच वर्ष बाद २६ जनवरी, ५५ को सामान्य डाक-टिकटों की दूसरी नियत टिकट-माला प्रकाशित की गई। इस टिकट-माला में १ पैसे से लेकर १० रुपये तक कुल १८

टिकट थे। इनमें प्रथम पंचवर्षीय योजना के दौरान विभिन्न क्षेत्रों में हुई प्रगति की एक छोटी-सी झलक प्रस्तुत की गई थी, इसलिए इसे पंचवर्षीय योजना माला भी कहा जाता है। इस माला के टिकटों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

(१) पहला टिकट ३ पाई मूल्य का है और गहरे गुलाबी रंग में छापा गया। इसपर हलयन्त्र(ट्रेक्टर)का चित्र अंकित है।

(२) दूसरा टिकट ६ पाई का है। बैंगनी रंग में मुद्रित इस टिकट पर बुनाई उद्योग के प्रतीक मिल के करघों का चित्र है।

(३) ६ पाई मूल्य का यह टिकट भगवा रंग में छापा गया। इस पर सिंचाई का साधन, बैलों द्वारा चलाए जाने वाले रहट का चित्र है।

(४) १ आने वाला टिकट नीले हरे रंग में मुद्रित है। इसपर दामोदर घाटी योजना के अन्तर्गत बनाए गए तिलया बांध का चित्र अंकित है।

(५) यह टिकट २ आने मूल्य का है और हल्के नीले रंग में छापा गया है। इसपर चर्खा चलाती हुई स्त्री का चित्र अंकित है, जो भारतीय कुटीर-उद्योग के विकास का प्रतीक है।

(६) ३ आने वाला टिकट हल्का नीला हरा है। इसपर हथकरघे पर कपड़ा बुनती हुई नागा स्त्री का चित्र है।

(७) ४ आने वाला टिकट चमकीला गुलाबी है। इसपर कांकरेज नस्ल की एक स्वस्थ बैल-जोड़ी का चित्र अंकित है।

(८) इस माला का ६ आने वाला टिकट मलेरिया नियन्त्रण आन्दोलन की स्मृति में निकाला गया। इसका रंग पीला भूरा है।

(९) यह टिकट ८ आने मूल्य का है और गहरे नीले रंग में छापा गया है। इसपर चित्तरंजन इंजिन कारखाने का चित्र अंकित है।

(१०) यह टिकट १० आने का है और नीले हरे रंग में छापा गया। इसपर बम्बई के मेरीन ड्राइव का चित्र अंकित है।

(११) १२ आने मूल्य के इस टिकट पर हिन्दुस्तान विमान कारखाना, बैंगलोर का चित्र अंकित है। इसका रंग चमकीला नीला है।

(१२) इसका मूल्य १४ आना है और यह गहरे हरे रंग में छापा गया है। इसपर काश्मीर की घाटी का दृश्य अंकित है।

(१३) १ रुपये मूल्य वाला यह टिकट काले हरे रंग में छपा है। इसपर टेलीफोन उद्योग का चित्र अंकित है।

(१४) यह टिकट १ रुपये २ आने का है और स्लेटी रंग में छापा गया है। इसपर 'कन्याकुमारी' का समुद्री दृश्य अंकित है।

(१५) १½ रुपये वाला यह टिकट लाल बैंगनी रंग में छपा है और इस पर कंचनचंघा पर्वत का दृश्य अंकित है।

(१६) २ रुपये वाला टिकट गुलाबी रंग में छपा है। इस-पर अलवाय स्थित विरल मिट्टी के कारखाने का चित्र अंकित है।

(१७) ५ रुपये वाला टिकट भूरे रंग में छापा गया है। इस पर सिंदरी के रासायनिक खाद-कारखाने का चित्र अंकित है।

(१८) इस माला का अंतिम टिकट १० रुपये मूल्य का है और नारंगी रंग में छापा गया है। इसपर इस्पात उद्योग का चित्र अंकित है।

इस माला का १०वाँ, १२वाँ, १४वाँ और १५वाँ टिकट वास्तव में वायु-डाक के लिए छापे गए थे, इसलिए इन चारों टिकटों पर उड़ते हुए वायुयान का चित्र भी अंकित किया गया है।

तृतीय नियत टिकट-माला
(भारतीय मानचित्र माला १९५७)

१ अप्रेल, १९५७ से भारत ने मुद्रा में दशमलव प्रणाली को अपना लिया। इसलिए इसके पश्चात् जारी किए जाने वाले सभी टिकटों पर इसी मुद्रा के अंक हैं। नई मुद्रा के अपना लिए जाने के कारण 'पंचवर्षीय योजना माला' के स्थान पर नई नियत टिकट-माला जारी करना भी आवश्यक था। इस प्रकार १ अप्रेल से ही नई मुद्रा वाली नियत टिकट माला जारी कर दी गई, जिसमें विभिन्न मूल्यों के १४ टिकट थे।

इस माला के १४ टिकटों के आकार और डिजाइन बिल्कुल समान हैं। मूल्य के अनुसार रंगों का अन्तर इस प्रकार है—

१ नया पैसा–नीला हरा	२ न० पै०–हल्का भूरा
३ न० पै०–गहरा भूरा	५ न० पै०–हरा
६ न० पै०–सलेटी	७ न० पै०– हलका हरा
१० न० पै०–मूंगिया	१३ न० पै०–चमकीला लाल
१५ न० पै०–जामुनी	२० न० पै०–नीला
२५ न० पै०–समुद्री नीला	५० न० पै०–नारंगी
७५ न० पै०–लाल बैंगनी	९० न० पै०–चमकीला बैंगनी

ये सभी टिकट तारों वाले जलचिह्नयुक्त कागज पर छापे गए थे। २७ अक्टूबर, ५८ से भारत ने अशोक स्तंभ का नया जलचिह्न अपना लिया। इसलिए सन् १९५८ से १९६३ के बीच ज्यों-ज्यों इन टिकटों का पुराना स्टाक खत्म होता गया, ये टिकट नए जलचिह्न वाले कागज पर छापकर प्रकाशित किए जाते रहे।

चतुर्थ नियत टिकट-माला

भारतीय नक्शे की चित्र वाली तृतीय नियत टिकटमाला के स्थान पर चौथी नियत टिकटमाला में १६ टिकट हैं। नये पैसे को केवल 'पैसा' कहे जाने के आदेश के कारण भी इस नियत माला का निकाला जाना जरूरी था। पहले वाली तीन नियत टिकट मालाओं की तरह इस माला के सभी टिकट एकसाथ निकाले गए। इस माला के दो टिकट सन् १९६५ में, तीन टिकट १९६६ में, ग्यारह टिकट १९६७ में और दो १९६८ में निकाले गए। शेष एक निकाला जाना शेष है। इस टिकटमाला के विभिन्न रंग-रूप और डिजाइनों वाले टिकटों का वर्णन इस प्रकार है—

(१) प्रथम टिकट २ पैसे मूल्य का है और इसका रंग लाल भूरा है। इसपर नक्काशीदार बीदरी पात्र (सुराही) का चित्र है।

(२) दूसरा टिकट ३ पैसे का है, जोकि खाकी रंग में छापा गया है। इसपर पीतल के जालीदार दीपाधार (फानूस) का चित्र है।

(३) तीसरा टिकट ४ पैसे मूल्य का है। गेरुआँ रंग में छपे इस टिकट पर काफी-फल का चित्र अंकित है।

(४) चौथा टिकट ५ पैसे मूल्य का है और चमकीले गुलाबी रंग में छपा है। इस पर दो बच्चों सहित एक दम्पति और परिवार नियोजन का प्रतीक त्रिकोण छपा है।

(५) पाँचवाँ टिकट ६ पैसे का है और सलेटी रंग में छपा है। इस पर कोणार्क मन्दिर में स्थित हाथी की मूर्ति का चित्र अंकित है।

(६) छठा टिकट ८ पैसे मूल्य का है। लाल भूरे रंग में छ

इस टिकट पर प्रसिद्ध भारतीय मृग 'चीतल' का चित्र अंकित है। बुक-पोस्ट की दरों में परिवर्तन हो जाने से इस टिकट का मुद्रण १२ अगस्त, १९६७ को बन्द कर दिया गया।

(७) सातवाँ टिकट १० पैसे का है, जिस पर नीले रंग में चित्तरंजन कारखाने में निर्मित बिजली के इंजन का चित्र अंकित है।

(८) आठवाँ टिकट १५ पैसे का है। गहरे हरे रंग में छपे इस टिकट पर चाय की पत्तियाँ चुनती हुई महिला का चित्र है।

(९) नवाँ टिकट २० पैसे मूल्य का है और बैंगनी रंग में छापा गया है। इसपर भारत निर्मित 'नेट' वायुयान का चित्र है।

(१०) दसवाँ टिकट ३०पैसे का गहरे भूरे रंग में छापा गया हैरतीय हस्तशिल्प के नमूने के रूप में गुड़ियों की एक जोड़ी अंकित है।

(११) चालीस पैसे मूल्य का ११ वाँ टिकट कलकत्ता डाकघर की शताब्दी के अवसर पर २ अक्टूबर, १९६८ को जारी किया गया। बैंगनी भूरे रंग में छपे इस टिकट पर कलकत्ता के बड़े डाकघर की इमारत का चित्र अंकित है।

(१२) पचपैसे मूल्य वाले बारहवें टिकट का रंग नीला हरा है और इसपर फलों के राजा आम का चित्र है।

(१३) तेरहवाँ टिकट ६० पैसे मूल्य का है। काले रंग में मुद्रित इस टिकट पर सोमनाथ के ऐतिहासिक मन्दिर का चित्र अंकित है।

(१४) चौदहवाँ टिकट ७० पैसे मूल्य का है और गहरे नीले रंग में छापा गया है। इसपर 'हम्पी रथ' का चित्र अंकित है।

(१५) पन्द्रहवाँ टिकट एक रुपये का है। गेरुआँ और बैंगनी रंग में छपे इस टिकट पर पत्र लिखती हुई नारी-मूर्ति का चित्र अंकित है। यह मध्यकालीन मूर्तिकला का सुन्दर नमूना है।

(१६) सोलहवाँ टिकट दो रुपये मूल्य का है और हलके व गहरे नीले रंग में मुद्रित है। इसपर काश्मीर की डलझील का मनोहारी दृश्य अंकित है।

(१७) भूरे और बैंगनी रंग में छापे गए ५ रुपये वाले टिकट पर संसार के सबसे बड़े बाँध भाखड़ा का चित्र अंकित है।

(१८) दस रुपये वाला टिकट गहरे नीले और काले रंग में छापा गया है, जिसपर ट्रॉम्बे स्थित परमाणु भट्टी 'अप्सरा' का चित्र अंकित है।

(१९) इस माला का अन्तिम टिकट १५ रुपये मूल्य का होगा जिसका प्रकाशन होना अभी बाकी है।

उपर्युक्त टिकटों में से १५ पैसे वाला टिकट १५ अगस्त १९६५ को और १० रुपये वाला टिकट १४ नवम्बर, १९६५ को जारी किया गया। इसके बाद ६ पैसे, १० पैसे और एक रुपये वाले टिकट १ जुलाई,१९६६ को; ८ पैसे, ३० पैसे, ५० पैसे,७० पैसे, २ रुपये और ५ रुपये वाले टिकट १५ मार्च, १९६७ को; २ पैसे, ३ पैसे, ५ पैसे, २० पैसे और ६० पैसे वाले टिकट १६ अक्टूबर, १९६७ को; ४ पैसे वाला टिकट १५ मई, ६८ को और ४० पैसे वाला टिकट २ अक्टूबर, ६८ को जारी किया गया। मूल योजना में ४ पैसे मूल्य वाला टिकट शामिल नहीं था, किन्तु डाक-दरों में अचानक परिवर्तन हो जाने के कारण पोस्टकार्डों पर चिपकाने के लिए यह टिकट विशेष रूप से जारी करना पड़ा। इस वर्ष नई डाक-दरें १५ मई, १९६८ से लागू की गई थीं।

विषय की दृष्टि से यह माला एक मिली-जुली टिकटमाला है जिसमें भारतीय शिल्प, कला, पुरातत्त्व, हस्तशिल्प, पशु, फल आदि से लेकर भारत की वैज्ञानिक प्रगति और परिवार-नियोजन तक के विषय सम्मिलित कर लिए गए हैं।



विशेष डाक-टिकट

(महापुरुषों और विशेष अवसरों की स्मृति में प्रकाशित)

आजादी मिलने के साथ ही हमें अवसर मिला कि हम अपने देश के महान पुरुषों की स्मृति में एवं ऐतिहासिक महत्त्व की तिथियों पर विशेष डाक-टिकट जारी कर सकें। भारतीय डाक-तार विभाग ने इस जिम्मेवारी को भली भाँति समझा है। १५ अगस्त १९४७ से यह विभाग प्रतिवर्ष अनेक विशेष टिकट प्रकाशित करता रहा है। इन विशेष टिकटों का वर्ष क्रमानुसार संक्षिप्त विवरण यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

१९४७

भारतीय स्वतन्त्रता दिवस की स्मृति में इस वर्ष ३ विशेष टिकट जारी किए गए। यद्यपि इन तीनों टिकटों पर १५ अगस्त, १९४७ छपा हुआ है, परन्तु समय पर तैयार न हो पाने के कारण ये इस तिथि से काफी समय बाद जारी किए गए।

(१) इनमें से पहला टिकट १½ आने मूल्य का है, जोकि १५

दिसम्बर, १६४७ को जारी किया गया। धूसर, हरे रंग में छपे इस टिकट पर भारत के राजचिह्न, तीन सिंहों की आकृति वाले अशोक स्तंभ का चित्र अंकित है।

(२) दूसरा टिकट ३½ आने मूल्य का है,जो कि २१ नवम्बर ४७ को निकाला गया। इसमें नीले रंग में भारत का राष्ट्रीय ध्वज (तिरंगा) अंकित किया गया है।

(३) तीसरा टिकट १२ आने मूल्य का है और १५ दिसम्बर ४७ को ही जारी किया गया। आसमानी रंग में छपे इस टिकट पर उड़ते वायुयान का चित्र है।

इन तीनों टिकटों पर बड़े अक्षरों में 'जय हिन्द' अंकित है इसलिए इन टिकटों को 'जयहिन्द माला' के टिकट भी कहा जाता है

१६४८

इस वर्ष कुल ५ विशेष डाक-टिकट जारी किए गए, जिनमें ४ राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की स्मृति में थे।

(१) इस वर्ष का प्रथम विशेष टिकट ८ जून १६४८ को जारी किया गया। १२ आने वाले इस विशेष टिकट पर एक आधुनिक वायुयान का चित्र है। यह टिकट एयर इण्डिया इण्टरनेशनल कम्पनी द्वारा भारत और ब्रिटेन के मध्य चालू की गई प्रथम वायु सेना की स्मृति में निकाला गया था।

(२), (३),(४),(५) ये चार विशेष टिकट राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की स्मृति में आजादी की प्रथम वर्षगांठ के अवसर पर १५अगस्त १६४८ को जारी किए गए, जिनपर गांधीजी की मुखाकृति अंकित है। १½आने,३½आने,१२आने और १०रुपये मूल्य वाले ये टिकट क्रमशः भूरे, बैंगनी, हरे और गेरुआँ रंग में छापे गए हैं। इनपर हिन्दी और उर्दू में 'बापू' भी छापा गया है। इन चारों टिकटों की थोड़ी-

मात्रा गवर्नर जनरल के उपयोग के लिए भी दी गई, जिनपर अंग्रेजी में 'सर्विस' शब्द अधिमुद्रित किया गया। ऐसे अधिमुद्रित टिकट आज अत्यन्त दुष्प्राप्य एवं मूल्यवान हैं। एक असली अधिमुद्रित १० रुपये वाले गांधी टिकट का मूल्य इस समय ६००० रुपये के लगभग है।

आश्चर्य की बात है कि जीवनभर स्वदेशी का समर्थन करने वाले गांधीजी के ये स्मृति-टिकट एक विदेशी स्विस कम्पनी द्वारा छपाए गए।

१९४९

१६ टिकटों की 'नियत टिकट माला' (पुरातत्त्वमाला) के अतिरिक्त इस वर्ष केवल ४ विशेष टिकट जारी किए गए। ये चारों टिकट विश्व डाक संघ की ७५वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में निकाले गए। ९ पाई, २ आना, ३½ आना, १२ आना मूल्य वाले इन टिकटों का रंग क्रमशः गहरा हरा, गुलाबी, नीला और भूरा है। इन चारों पर ग्लोब के साथ अशोकस्तंभ का चित्र अंकित किया गया है।

इस वर्ष जारी की गई पुरातत्त्वमाला का वर्णन प्रथम नियत टिकट-माला शीर्षक के अन्तर्गत किया गया है।

१९५०

भारतीय गणतन्त्र के उद्घाटन के अवसर पर इस वर्ष २६ जनवरी को ४ विशेष टिकट जारी किए गए।

(१) प्रथम टिकट २ आने मूल्य का है और लाल रंग में छापा गया है। इसपर एक बालक और एक बालिका को किसी जलूस को देखते हुए दिखाया गया है।

(२) दूसरा टिकट ३½ आने मूल्य का है और गहरे नीले रंग में छापा गया है। इसपर एक दवात में पंख और रघुपति राघव

राजा राम' की पंक्तियाँ अंकित की गई हैं।

(३) तीसरा टिकट ४ आने का है और बैंगनी रंग में मुद्रित है। इसपर धान की बाली एवं हल का चित्र अंकित है।

(४) १२ आने मूल्य वाला चौथा टिकट भूरे रंग में छपा है जिस पर चरखे और कपड़े का चित्र अंकित है।

इन चारों टिकटों की डिजाइनें कलकत्ता की डी० जे० केमर एण्ड कम्पनी द्वारा तैयार की गई थीं।

१९५१

इस वर्ष दो अवसरों पर केवल ३ विशेष टिकट जारी किए गए। पहला टिकट १३ जनवरी, १९५१ को भारतीय भूगर्भ सर्वेक्षण विभाग की शताब्दी के अवसर पर जारी किया गया। यह टिकट लाल और काले रंग में छापा गया। इसपर भारतीय हाथियों की एक लुप्त जाति 'स्टेगोडॉन गणेश' का चित्र अंकित है।

इस वर्ष के दूसरे और तीसरे विशेष टिकट ४ मार्च को प्रथम एशियाई खेल प्रतियोगिता के अवसर पर निकाले गए। ये खेल इसी दिन दिल्ली में प्रारंभ हुए थे। इन टिकटों पर दक्षिण-पूर्वी एशियाई समुद्री तट का नक्शा और मशाल लिए हाथ का चित्र अंकित है। दो आने मूल्य के टिकट का रंग नारंगी और बैंगनी है जबकि बारह आने वाले टिकट का रंग नीला और भूरा है।

१९५२

इस वर्ष दिनांक १. १०. ५२ को संत-कवि माला के अन्तर्गत ६ विशेष डाक-टिकट जारी किए गए। इनमें पहले टिकट पर संत कबीर, दूसरे पर तुलसीदास, तीसरे पर मीरा, चौथे पर सूरदास, पांचवे पर मिर्जा गालिब और छठे पर कवींद्र रवीन्द्र के सुन्दर

चित्र अंकित हैं। इन टिकटों का मूल्य क्रमशः पौन आना, एक आना, दो आना, चार आना, साढ़े चार आना, और बारह आना, और रंग इसी क्रम से हरा, लाल, केसरिया, नीला, बैंगनी और भूरा था।

यह टिकट-माला जन सामान्य में बहुत लोकप्रिय हुई। भारतीय सुरक्षा मुद्रणालय नासिक द्वारा मुद्रित ये पहले टिकट थे जो 'फोटोग्रेवर' पद्धति से छापे गए थे।

१९५३

इस वर्ष तीन अवसरों पर कुल ५ विशेष डाक-टिकट जारी किए गए।

(१) इस वर्ष का सबसे पहला विशेष टिकट १६ अप्रेल को भारतीय रेलवे के शताब्दी समारोह के अवसर पर प्रकाशित किया गया। काले रंग में छपे इस दो आने मूल्य के टिकट पर १८५३ और १९५३ के इंजनों के चित्र हैं।

(२), (३) संसार के सर्वोच्च शिखर एवरेस्ट पर विजय प्राप्त कर लेने के उपलक्ष्य में २ अक्टूबर को २ आने और १४ आने मूल्य के दो विशेष डाक-टिकट निकाले गए। बैंगनी और भूरे रंग छपे इन टिकटों पर एवरेस्ट शिखर का चित्र और उसपर सफलता-पूर्वक आरोहण की तिथि २९.५.५३ अंकित है। इटली की ऑल-म्पिक समिति ने इसे 'पर्वतारोहण पर अति सुन्दर टिकट' मानकर अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार दिया था।

(४), (५) टेलीग्राफ शताब्दी की स्मृति में १ नवम्बर को २ आने और १२ आने मूल्य के दो विशेष डाक-टिकट जारी किए गए, जिनका रंग क्रमशः हलका हरा और नीला है। इनपर १८५१ और १९५१ के टेलीग्राफ के तारयुक्त खम्भे दिखाए गए हैं।

१९५४

भारत के प्रथम डाक-टिकट को प्रकशित हुए १०० वर्ष पूरे हो गए थे। इस उपलक्ष्य में इस वर्ष डाक-तार विभाग ने धूम-धाम से शताब्दी समारोह मनाया। इस अवसर पर दिनांक १.१०.५४ को निम्नलिखित ४ विशेष टिकट जारी किए गए—

(१) पहला टिकट १ आने मूल्य का है जो लाल बैंगनी रंग में छापा गया है। इसपर डाक ले जाने के तीन प्राचीन साधनों-हरकारा, ऊँट एवं बैलगाड़ी के चित्र अंकित हैं।

(२) दूसरा टिकट २ आने मूल्य का है और गहरे गुलाबी रंग में छापा गया है। इसपर पत्र-वाहक कबूतर और वायुयान का चित्र अंकित है।

(३) तीसरा टिकट ४ आने मूल्य का है और नारंगी भूरे रंग में छापा गया है। इसपर डाक ले जाने के ४ आधुनिक साधनों-साइकिल, रेलगाड़ी, जहाज एवं वायुयान का चित्र अंकित है।

(४) चौथा टिकट १४ आने मूल्य का है और गहरे नीले रंग में छापा गया है। इसका डिजाइन २ आने टिकट वाला ही है।

इन चार टिकटों के अतिरिक्त दो अन्य टिकट भी इस वर्ष निकाले गए—

(१) यह टिकट संयुक्तराष्ट्र दिवस के अवसर पर २४.१०.५४ को निकाला गया। हल्के हरे रंग में छपा यह टिकट २ आने मूल्य का है।

(२) इस वर्ष का अन्तिम विशेष टिकट चतुर्थ विश्व-वन-कांग्रेस के अवसर पर दिनांक ११ दिसम्बर ५४ को निकाला गया। समुद्री नीले रंग में छपे इस टिकट का मूल्य २ आना है और इसपर देहरादून स्थित वन-अनुसन्धान संस्था का चित्र अंकित है।

१९५५

द्वितीय नियत टिकट-माला (पंचवर्षीय योजना माला) के अतिरिक्त इस वर्ष कोई विशेष टिकट नहीं निकाला गया।

१९५६

इस वर्ष केवल ३ विशेष डाक-टिकट जारी किए गए। प्रथम दो टिकट भगवान बुद्ध की २५००वीं जयन्ती के अवसर पर २४ मई, ५६ को जारी किए गए। इस अवसर पर सारनाथ एवं बुद्ध के जीवन से संबन्धित अन्य स्थानों पर समारोहों का आयोजन किया गया, जिनमें देश-विदेश के अनेक बौद्धों ने भाग लिया। इन टिकटों में से दो आने वाला टिकट भूरे रंग में छपा है और इसपर बोधि-वृक्ष का डिजाइन अंकित है। दूसरा टिकट १४ आने मूल्य का है और सिंदूरी रंग में छापा गया है। इसपर एक गोल छतरी एवं बोधिवृक्ष का चित्र है।

इस वर्ष का तीसरा टिकट लोकमान्य तिलक की जन्म शताब्दी के अवसर पर २३.७.५६ को जारी किया गया। दो आने मूल्य का यह टिकट गेरुआँ रंग में छापा गया है। लोकमान्य तिलक का जन्म २३ जुलाई १८५६ में रत्नागिरी में हुआ था। आप कांग्रेस के गरम दल के नेता माने जाते थे। अपने 'केसरी' और 'मरहठा' पत्रों में आपत्तिजनक लेख लिखने के कारण आपको कई बार जेल जाना पड़ा। 'स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं उसे लेकर ही रहूँगा' का सिंहनाद करने वाले इस महान देशभक्त का देहान्त ३१ जुलाई १९२० को हुआ था।

१९५७

इस वर्ष ४ विशेष अवसरों पर कुल ९ विशेष टिकट जारी किए गए, जिनका विवरण निम्नानुसार है—

(१) १८५७ के स्वाधीनता विद्रोह की शताब्दी के अवसर पर १५ नये पैसे और ९० नये पैसे मूल्य के दो विशेष टिकट दिनांक १५.८.५७ को निकाले गए। इनमें से पहला टिकट भूरे रंग में छापा गया है और उसपर स्वतन्त्रता आंदोलन की अमर सेनानी झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का घोड़े पर सवार चित्र अंकित है।

(२) ९० नये पैसे मूल्य का दूसरा टिकट लाल बैंगनी रंग में छापा गया है। इसपर 'शहीद स्मारक' जैसा चित्र अंकित है।

(३) इस वर्ष का तीसरा टिकट नई दिल्ली में आयोजित १९ वें अन्तर्राष्ट्रीय रेडक्रास सम्मेलन के अवसर पर दिनांक २८ अक्टूबर, को निकाला गया। इस टिकट पर रेडक्रास संस्था के संस्थापक हेनरी ड्यूने का चित्र और सम्मेलन का प्रतीक चिह्न अंकित है। यह टिकट चमकीले लाल और काले रंग में छापा गया है।

(४), (५), (६) स्वर्गीय प्रधानमन्त्री नेहरू के जन्मदिवस 'बाल दिन' पर इस वर्ष से विशेष डाक-टिकट निकाला जाना प्रारम्भ हुआ। इस वर्ष इस अवसर पर ३ विशेष टिकट जारी किए गए। इनमें पहला टिकट ८ नये पैसे मूल्य का है और गुलाबी बैंगनी रंग में छापा गया है। इसपर केला खाते हुए बच्चे का सुन्दर चित्र है। दूसरा टिकट १५ नये पैसे मूल्य का है और नीले हरे रंग में मुद्रित है। इसपर स्लेट पर लिखती हुई लड़की का चित्र अंकित है। तीसरा टिकट ९० नये पैसे का है और नारंगी भूरे रंग में छापा गया है। इसपर घोड़े के खिलौने का चित्र बना है।

(७), (८), (९) इस वर्ष के तीनों अंतिम टिकट ३१.१२.५७

को भारत के तीन विश्वविद्यालयों—बम्बई, कलकत्ता और मद्रास की शताब्दी के अवसर पर निकाले गए। इनमें से हर टिकट का मूल्य १० नये पैसे है और इनका रंग क्रमशः बैंगनी, मटमैला सलेटी और हल्का भूरा है। इनपर विश्वविद्यालयों की इमारतों के चित्र अंकित हैं।

१९५८

इस वर्ष कुल ८ विशेष डाक-टिकट जारी किए गए, जिनका विवरण निम्नानुसार है—

(१) भारतीय स्पात उद्योग की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर इस वर्ष का सबसे पहला विशेष टिकट दिनांक १.३.५८ को जारी किया गया। इसपर टाटा इस्पात कारखाने और उसके संस्थापक जमेशदजी टाटा का चित्र अंकित है। यह टिकट १५ नये पैसे मूल्य का है और केसरिया रंग में छापा गया है।

(२) भारतरत्न महर्षि कर्वे की जन्म शताब्दी के अवसर पर १८ अप्रेल, ५८ को विशेष टिकट जारी किया गया। इसका रंग भगवा और मूल्य १५ नये पैसे है। धोंडो केशव कर्वे का जन्म १८ अप्रेल, १८५८ को कोंकण के मुरुड़ ग्राम में हुआ था। बी० ए० करने के बाद आप २३ वर्ष तक गणित प्राध्यापक के रूप में काम करते रहे। तत्पश्चात् कर्वे ने आजीवन नारी जागरण और नारी शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी कार्य किया। ९ नवम्बर, १९६२ को १०४ वर्ष की आयु में आपका देहान्त हो गया।

(३), (४) भारतीय वायुसेना की शताब्दी के अवसर पर दो विशेष टिकट ३०.४.५८ को जारी किए गए, जिनपर पुराने वायुयान 'वापिती' और नये युद्ध विमान 'हण्टर' के चित्र अंकित हैं। १५ नये पैसे और ९० नये पैसे मूल्य के इन टिकटों का रंग क्रमशः

नीला और गहरा आसमानी है।

(५) भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के अग्रणी नेता एवं प्रभावशाली वक्ता बिपिनचन्द्र पाल की जन्म शताब्दी के अवसर पर ७ नवम्बर, ५८ को १५ नये पैसे मूल्य का एक विशेष टिकट निकाला गया जिसका रंग गहरा हरा है। श्री पाल का जन्म १५५८ में सिल-हट में हुआ था। शिक्षा समाप्तकर आप १० वर्ष तक अध्यापन-कार्य करते रहे। तत्पश्चात् आपने इंगलेण्ड में 'स्वराज्य' और भारत मे 'न्यू इंडिया' पत्र का सम्पादन किया। लगभग आधी शताब्दी तक बंगाल की राजनीति का संचालन करने के बाद आपका देहान्त २० मई १९३४ को हुआ था।

(६) इस वर्ष बाल दिन के अवसर पर १४.११.५८ को जो विशेष टिकट जारी किया गया उस पर एक बीमार बच्चे की देख भाल करती हुई नर्स का चित्र है। यह टिकट १५ पैसे मूल्य का है और बैंगनी रंग में छपा हुआ है।

(७) महान भारतीय वैज्ञानिक सर जगदीश चन्द्र बोस की जन्म शताब्दी के अवसर दिनांक ३०.११.५८ को एक विशेष टिक निकाला गया। डा० बोस का जन्म ३० नवम्बर, १८५८ को विक्रम पुर के राणीखल ग्राम में हुआ था। कलकत्ता में शिक्षा समाप्त क आप उच्च शिक्षा हेतु केम्ब्रिज विश्वविद्यालय में प्रविष्ट हुए जह से सन् १८९६ में आपने डी० एस-सी० की उपाधि प्राप्त की। लगभ २० वर्षों तक कलकत्ता के प्रेसीडेंसी कालेज में अध्यापक के पद प कार्य करने के पश्चात् आपने ३० नवम्बर, १९१७ को, कलकत्ता बोस इंस्टीट्यूट की स्थापना की। डा० बोस ही पहले वैज्ञानिक जिन्होंने यह सिद्ध कर दिया था कि पौधों में प्राणियों की भाँ चेतना होती है। इस महान् वैज्ञानिक का निधन २३ नवम्बर, १९३ को हुआ।

(८) इस वर्ष का अंतिम विशेष टिकट दिल्ली में आयोजित 'भारत १९५८' प्रदर्शनी के उद्घाटन के अवसर पर ३० दिसम्बर, १९५८ को निकाला गया। लाल बैंगनी रंग में छपे १५ पैसे मूल्य के इस टिकट पर इस प्रदर्शनी के मुख्य प्रवेशद्वार का चित्र अंकित किया गया है।

१९५९

इस वर्ष केवल ४ विशेष टिकट निकाले गए।

(१) सबसे पहला टिकट श्री जमशेदजी जीजी भाई बार्ट की निधन शताब्दी पर दिनांक १५ अप्रेल, १९५९ को जारी किया गया। सर जे०जे० बार्ट का जन्म १५ जुलाई, १७८३ को बम्बई में हुआ था। साधारण से व्यापारी के रूप में जीवन प्रारम्भ करते हुए सर बार्ट ने सिंगापुर, चीन, मिश्र और ब्रिटेन तक अपना व्यापार फैला दिया जो लगभग ५५ वर्षों तक चलता रहा। अपार सम्पत्ति अर्जित कर उन्होंने समाज सेवा के अनेक कार्य किए। बम्बई स्थित जे० जे० अस्पताल, सर जे० जे० स्कूल ऑफ आर्ट एण्ड आर्चिटेक्चर उनके चिर-स्थायी स्मारक हैं। सर बार्ट का देहान्त १५ अप्रेल, १८५९ को हुआ था।

(२) इस वर्ष का दूसरा टिकट अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन की चालीसवीं वर्षगांठ के अवसर पर दिनांक १५ जून, ५९ को निकाला गया। जैतूनी हरे रंग में छपे इस टिकट का मूल्य १५ पैसा है। इसपर डी० पी० राय चौधरी द्वारा निर्मित 'श्रम की विजय' नामक शिल्पाकृति का चित्र अंकित किया गया है।

(३) 'बाल दिन' १४ नवम्बर को प्रकाशित तीसरा विशेष टिकट १५ पैसे मूल्य का है और गहरे मूँगिया रंग में छापा गया है। इसपर बाल-घर में प्रवेश पाने की प्रतीक्षा में खड़े दो बच्चों का चित्र अंकित है।

(४) इस वर्ष का अंतिम टिकट ३० दिसम्बर को निकाल गया। प्रथम विश्व कृषि मेले के अवसर पर निकाले गए इस टिक पर हल चलाते किसान का चित्र है। हल्के स्लेटी रंग में छपे इ टिकट का मूल्य १५ पैसा था। इस मेले का उद्घाटन डा राजेन्द्रप्रसाद द्वारा दिनांक ११ दिसम्बर, ५९ को किया गया थ और यह मेला फरवरी, ६० के अन्त तक चलता रहा।

१९६०

इस वर्ष प्रकाशित किए गए विशेष डाक-टिकटों की संख्य ७ थी—

(१) सबसे पहला टिकट तमिल संत कवि तिरुवल्लुवर क पुण्य तिथि पर १५ फरवरी, १९६० को जारी किया गया। ला बैंगनी रंग में छपे इस टिकट का मूल्य १५ नये पैसे है और इस संत तिरुवल्लुवर का चित्र अंकित है। इनकी प्रसिद्धि का मुख् कारण इनके द्वारा रचित तमिल वेद 'तिरुक्कुरल' है, जिसमें सभ धर्मों का सार-सिद्धान्त एवं नीति-वाक्य संगृहीत हैं। इस ग्रन्थ क भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त अँग्रेजी, लेटिन और कुछ अन् यूरोपीय भाषाओं में अनुवाद हो चुका है।

(२), (३) इस वर्ष कालिदास जयन्ती पर २२ जून, ६० क दो विशेष टिकट जारी किए गए। १५ नये पैसे और १ रु० ३ न पैसे मूल्य के इन टिकटों का रंग क्रमशः स्लेटी और भूरा है। प्रथ टिकट पर विरही यक्ष को बादलों द्वारा अपनी पत्नी को संदेश भेज चित्रित किया गया है तो दूसरे टिकट पर विरहिणी शकुन्तला क कमल पत्र पर महाराज दुष्यन्त को पत्र लिखते दिखाया गया है।



प्रथम नियत टिकट माला

पुरातत्त्व माला

१९४९


द्वितीय नियत टिकट माला १९५५
पंचवर्षीय योजना माला


तृतीय नियत टिकट माला
मानचित्र माला
१९५७


चतुर्थ नियत टिकट माला



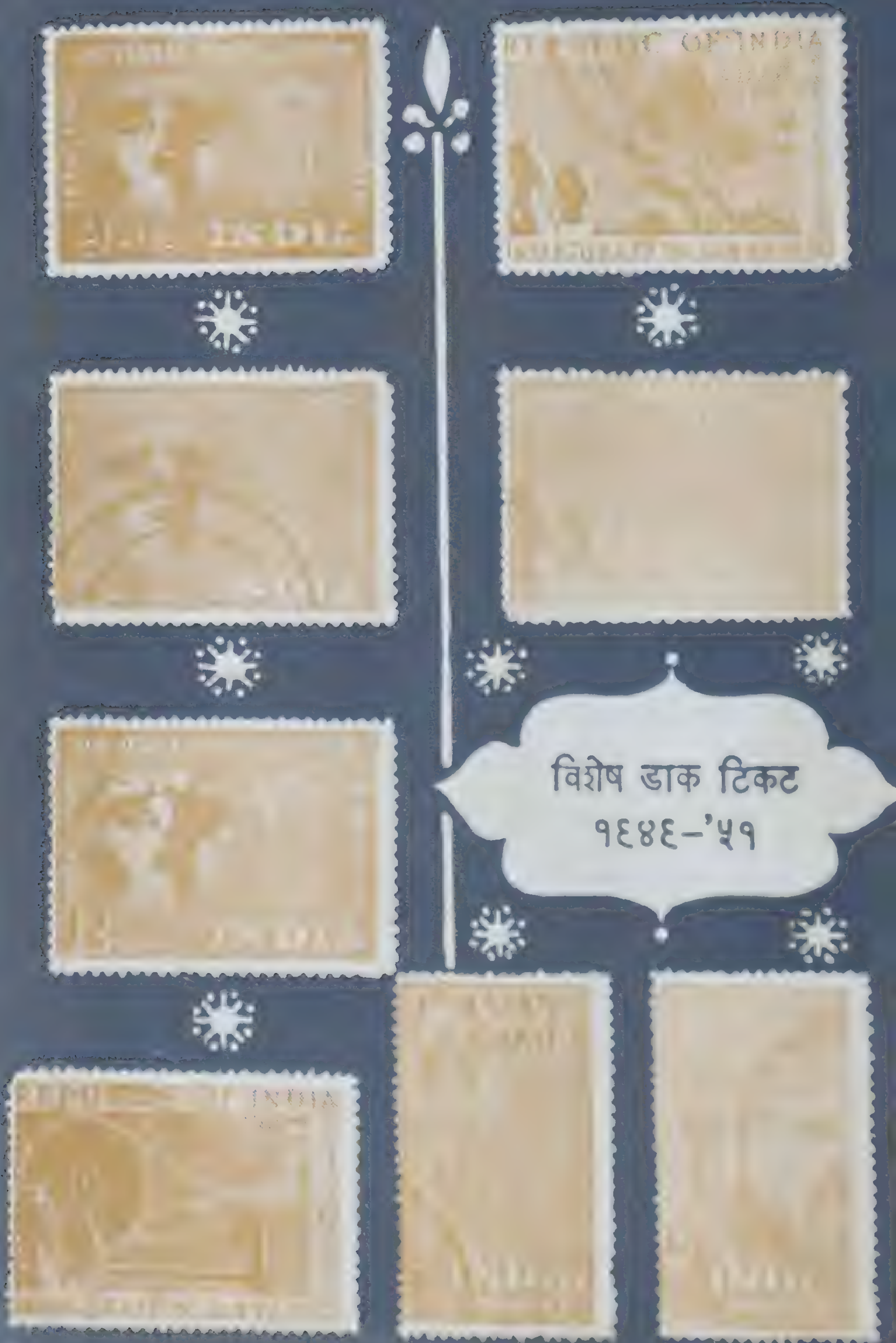


विशेष
डाक टिकट
१९४७-'४८








विशेष डाक टिकट
१९४९–'५१


INDIA
INDIA
INDIA POSTAGE
INDIA
विशेष डाक टिकट
१६५२-'५३


INDIA POSTAGE
विशेष डाक टिकट
१९५४, '५६


विशेष डाक टिकट
१९५७


विशेष डाक टिकट
१९५८, '६०



विशेष डाक टिकट
१९६१


विशेष डाक टिकट
१९६२-'६३
INDIA
INDIA
INDIA POSTAGE


विशेष डाक टिकट
१९६४


विशेष डाक टिकट
१९६५


विशेष डाक टिकट
१९६६


विशेष डाक टिकट
१९६७

(४) चौथा विशेष टिकट तमिल के राष्ट्रीय कवि सुब्रह्मण्यम भारती की स्मृति में दिनांक ११.९.६० को जारी किया गया। नीले रंग में छपे १५ नये पैसे मूल्य के टिकट पर कवि भारती का चित्र है जिन्होंने तमिल प्रदेश के घर-घर में अपनी देशभक्ति की रचनाओं द्वारा नव-जागरण का संदेश पहुँचाया। कवि भारती का जन्म सन् १८८२ और निधन सन् १९२१ में हुआ था।

(५) भारतरत्न डा० मोक्षगुण्डम् विश्वेश्वरैया की जन्म-शताब्दी के अवसर पर दिनांक १५ सितम्बर को भूरे और चमकीले गुलाबी रंग का विशेष टिकट निकाला गया, जिसका मूल्य १५ न. पै. है। विश्वेश्वरैया का जन्म कोलार के एक साधारण परिवार में १५ सितम्बर, १८६१ को हुआ था। शिक्षा समाप्त कर आपने जीवनभर एक कुशल इंजीनियर के रूप में देश की अनेक सिंचाई योजनाओं को सफलतापूर्वक पूरा किया। कावेरी बांध, कृष्णराज सागर बाँध, हीराकुण्ड बाँध, मैसूर के वृन्दावन उद्यान आपकी कीर्ति के अमर स्तम्भ हैं। इस महान कर्मयोगी का देहान्त १४ अप्रेल, १९६२ को हुआ।

(६) इस वर्ष बाल दिवस पर १५ नये पैसे का जो विशेष टिकट निकाला गया उसपर गहरे हरे रंग में कैरम खेलते हुए और ग्लोब का अध्ययन करते हुए बच्चों के दो अलग-अलग चित्र हैं। 'खेल के समय खेल' और 'पढ़ाई के समय पढ़ाई' यही इस टिकट पर चित्रित किया गया है।

(७) इस वर्ष का अन्तिम टिकट ११ दिसम्बर को संयुक्त-राष्ट्र बाल कल्याण कोष दिवस पर निकाला गया। केसरिया और नीले भूरे रंग में छपे इस टिकट पर बच्चों को संयुक्त राष्ट्र के प्रतीक-चिह्न का अभिनन्दन करते हुए दिखाया गया है। डिजाइन और छपाई की दृष्टि से यह इस वर्ष का सबसे सुन्दर टिकट है।

१९६१

इस वर्ष विगत वर्षों की अपेक्षा अधिक संख्या में विशेष टिकट जारी किए गए। इस वर्ष कुल मिलाकर १६ विशेष टिकट जारी किए गए, जिनका विवरण निम्नानुसार है—

(१) इस वर्ष का सबसे पहला टिकट संत, कवि एवं गायक त्यागराज की ११४वीं निधन-तिथि पर ६ जनवरी को जारी किया गया। १५ नये पैसे मूल्य के इस टिकट का रंग नीला है। राम के अनन्य भक्त संत त्यागराज का जन्म तंजौर जिले के तिरुवैय्यरु ग्राम में हुआ था। दक्षिणभारतीय संगीत को उन्होंने बहुत प्रभावित किया। इस महान भक्त एवं संत संगीतज्ञ का देहान्त ६ जनवरी, १८४७ को हुआ था।

(२), (३), (४) प्रथम वायु-डाक-सेवा की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर १८ फरवरी को भारतीय डाक-तार विभाग ने ५ नये पैसे, १५ नये पैसे एवं १ रु० मूल्य के ३ विशेष टिकट जारी किए। ५० वर्ष पूर्व इसी तिथि को एक फ्रांसीसी हवाबाज हेनरी पीक्विट ने लगभग ६५०० पत्रों वाले एक डाक थैले को लेकर इलाहाबाद से नैनी तक उड़ान भरी। ५ नये पैसे वाला टिकट जैतूनी हरे रंग में छापा गया है और उसपर उस समय काम में ली गई वायु डाक की सेवा की विशेष मुहर का चित्र अंकित है। दूसरा १५ नये पैसे वाला टिकट गहरे हरे रंग और हल्के स्लेटी रंग में छापा गया है। इसपर सन् १९११ के विमान और वर्तमान ७०७ बोइंग जेट विमान का चित्र अंकित है। एक रुपए मूल्य के तीसरे टिकट का रंग गुलाबी और हल्का स्लेटी है। इसपर हेनरी पीक्विट को अपने जहाज हम्बर में उड़ते दिखाया गया है और सन् १९११ की वायु-डाक की मुहर का चित्र भी अंकित किया गया है। भारतीय डाक-टिकटों के इतिहास

में इससे पूर्व इतने बड़े आकार के टिकट नहीं निकाले गए।

(५) १७ अप्रेल को महान देशभक्त छत्रपति शिवाजी की जयन्ती के अवसर पर गहरे और कत्थई रंग का टिकट निकाला गया। जिसपर घुड़सवार शिवाजी को युद्धवेश में दिखाया गया है। इसका डिजाइन महाराष्ट्र विधान सभा में लगे गोपाल देउसकर के चित्र की अनुकृति है। शिवाजी का जन्म अप्रेल, १६२७ को पूना के समीप शिवनेरी के किले में हुआ था। अपने राज्य और महाराष्ट्र प्रदेश की रक्षा के लिए वे जीवन-भर मुगल बादशाहों से लड़ते रहे उनका देहान्त ४ अप्रेल, १६८० को हुआ।

(६) ६ मई को पं. मोतीलालनेहरू की जन्म शताब्दी के अवसर पर १५ नये पैसे मूल्य का जो टिकट निकाला गया उसका रंग नारंगी और जैतूनी भूरा है, शाही ठाट-बाट से जीवन बिताने वाले इस महापुरुष ने असहयोग आंदोलन के समय अपनी बैरिस्टरी छोड़ दी और वे जेल गए। वे उदारवादी राजनीतिज्ञ थे। उनका देहान्त ६ फरवरी, १९३१ को हो गया। वे अपने पीछे जवाहरलाल नेहरू जैसे सुयोग्य व मेधावी पुत्र एवं श्रीमती विजयलक्ष्मी जैसी देशभक्त पुत्री को छोड़ गए।

(७) महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर की जन्म शताब्दी इस वर्ष देश-विदेश में बहुत धूमधाम से मनाई गई। इस अवसर पर ७ मई, ६१ को एक विशेष टिकट निकाला गया, जिसपर नारंगी व हरे रंग में श्री टैगोर का चित्र और उनके हस्ताक्षर अंकित हैं। श्री रवीन्द्रनाथ का जन्म कलकत्ता में महर्षि देवेन्द्रनाथ के परिवार में ६ मई, १८६१ को हुआ था। विवाह के पश्चात १७ वर्षों तक आप सियालदा में अपने ससुर की रियासत की देख-भाल करते रहे। इसी काल में आपने गीतांजलि एवं अन्य विख्यात पुस्तकों की रचना की। बाद में १९१३ में 'गीतांजलि' पर आपको नोबल पुरस्कार प्रदान

किया गया। सन् १६०१ में आपने अन्तर्राष्ट्रीय संस्था विश्व भारती शांति निकेतन की स्थापना की। ७ अगस्त, १६४१ को इस महान कवि, चित्रकार और देशभक्त का देहान्त हो गया।

(८) ८ जून १६६१ को अखिल भारतीय आकाशवाणी ने अपनी रजत जयन्ती मनाई। इस अवसर पर १५ नये पैसे मूल्य का नीले रंग का एक सुन्दर टिकट निकाला गया, जिसपर आकाशवाणी का प्रतीकचिह्न और ट्रांसमिटिंग एरियल्स के चित्र अंकित हैं।

(६) प्रख्यात वैज्ञानिक, शिक्षा-शास्त्री एवं समाजसेवक श्री प्रफुल्लचन्द्र रे की जन्म शताब्दी के अवसर पर दिनांक २ अगस्त को हल्के स्लेटी रंग का टिकट निकाला गया, जिसपर श्री रे का चित्र अंकित है। आप एक महान रसायनशास्त्री थे और कई वर्षों तक प्रेसीडेंसी कॉलेज कलकत्ता में इस विषय के प्रोफेसर थे। इसके अतिरिक्त बंगाल के अनेक रासायनिक संस्थानों के आप संस्थापक रहे, जिनमें 'बंगाल केमिकल एण्ड फार्मेसी वर्क्स' प्रमुख है। आपका देहान्त १६ जनवरी, १९४४ को हुआ।

(१०) जन्माष्टमी, १ सितम्बर, १६६१ को भारतीय संगीत में पुनर्जागरण का युग लाने वाले विष्णु नारायण भातखण्डे की १०१वीं जन्मतिथि के अवसर पर गहरे जैतूनी हरे रंग का एक विशेष टिकट प्रचलित किया गया। भातखण्डे जी का जन्म जन्माष्टमी, १० अगस्त, १८६० को हुआ था। बम्बई और पूना में शिक्षा पूरी कर भातखण्डे जी १८८७ में वकील बन गए। अपने कालेज के दिनों से ही इनको संगीत का शौक था, जो इनकी पत्नी और पुत्री के देहान्त के पश्चात् इनके जीवन का एकमात्र लक्ष्य बन गया। भारत के संगीत-सम्बन्धी अनेक प्राचीनग्रन्थों का शोध करके आपने संगीत-सम्बन्धी अनेक पुस्तकें प्रकाशित करवाईं, जोकि आज भी संगीत-प्रेमियों का मार्गदर्शन करती हैं। आजीवन संगीत की सेवा करने

वाले इस संगीतज्ञ का देहान्त १६ सितम्बर, १६३६ को हुआ।

(११) बाल दिवस, १४ नवम्बर को निकाला गया इस वर्ष का टिकट गहरे कत्थई रंग का है, जिसपर एक बालक को लेथ मशीन पर काम करते दिखाया गया है।

(१२) १४ नवम्बर को ही 'द्वितीय भारतीय उद्योग मेला' का उद्घाटन उपराष्ट्रपति राधाकृष्णन द्वारा किया गया। इस मेले में लगभग ५० देशों ने भाग लिया और अपने यहाँ के प्रमुख उद्योग धन्धों की झलक प्रस्तुत की। नीले और लाल रंग में छपे इस टिकट पर प्रवेशद्वार और उद्योग का प्रतीकचिह्न अंकित है।

(१३) इस वर्ष देहरादून में वैज्ञानिक वन-विज्ञान की शताब्दी मनाई गई। इस असवर पर २१ नवम्बर को हरे और भूरे रंग का जो विशेष टिकट जारी किया गया उसपर हिमालय की पृष्ठ-भूमियुक्त भारतीय वनों का एक दृश्य अंकित है।

(१४), (१५) भारतीय पुरातत्त्व-विभाग का शताब्दी-समारोह इस वर्ष १४ से २१ दिसम्बर तक मनाया गया। इस अवसर पर डाक-विभाग ने १५ नये पैसे और ६० नये पैसे मूल्य के दो विशेष टिकट निकाले। पहला टिकट नारंगी भूरे रंग में छापा गया है और इसपर पीतल खोराः यक्ष की मूर्ति अंकित है। दूसरा टिकट सुनहरे हरे और भूरे रंग में छापा गया है, जिसपर काली नंगा की खुदाई में प्राप्त मुहर का चित्र अंकित है।

(१६) इस वर्ष का अंतिम टिकट महामना मदनमोहन मालवीय की जन्म शताब्दी के अवसर पर २५ दिसम्बर, १६६१ को निकाला गया। यह टिकट गहरे स्लेटी रंग में छापा गया है और इसपर मालवीय जी का चित्र अंकित है। मालवीय जी का जन्म २५ दिसम्बर, १८६१ को इलाहाबाद में हुआ था। कुछ दिन अध्यापन कार्य करने के पश्चात् आपने एम० ए०, एल-एल० बी० की परीक्षाएँ

उत्तीर्ण कर वकालत करना प्रारम्भ किया। सन् १८८६ में कलकत्त में हुए कांग्रेस के दूसरे अधिवेशन में प्रथम बार राजनीतिक भाष देकर आपने कांग्रेस दल में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बना लिया आप १६०६ और १६१८ में हुए कांग्रेस के लाहौर और दिल्ली अधि वेशनों के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। इसके बाद आप कई वर्षों त हिन्दू महासभा के सर्वेसर्वा रहे। आपकी कीर्ति का अमर स्तम है बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, जिसके लिए आपने झोली फैलाक घर-घर जाकर भिक्षा मांगी। इसके अतिरिक्त आप हिन्दी साहि सम्मेलन प्रयाग और 'लीडर' पत्र के संस्थापकों में से भी एक थे इस महापुरुष का देहान्त १२ नवम्बर, १६४६ को हो गया।

१६६२

सन् १६६२ में निकाले गए विशेष डाक-टिकटों की संख्य १५ है। इनमें से प्रत्येक टिकट १५ नये पैसे मूल्य का था और इसक लगभग २५ लाख प्रतियाँ छापी गई थीं।

(१) इस वर्ष का सबसे पहला विशेष टिकट १ जनवरी क गोहाटी में नवनिर्मित तेलशोधक कारखाने के उद्घाटन के अवस पर प्रकाशित किया गया। इसका उद्घाटन इस दिन पं० जवाह लाल नेहरू द्वारा किया गया था। यह टिकट हलके नीले रंग छापा गया है और इसपर तेलशोधक कारखाने का एक दृश्य औ आसाम के प्रसिद्ध वन्य पशु गैंडे का चित्र अंकित है।

(२) गणतन्त्र दिवस के अवसर पर २६ जनवरी को 'पंच यत राज' सम्बन्धी गुलाबी रंग का टिकट जारी किया गया। टिक पर विशाल वटवृक्ष के नीचे ग्राम पंचायत की सभा का दृश्य है। य टिकट स्वशासन की दिशा में हमारे लक्ष्य और प्रगति का सूचक है

(३) गणतन्त्र दिवस पर ही प्रकाशित दूसरा टिकट भारती

स्वतन्त्रता संग्राम की एक अमर सेनानी श्रीमती भीखाजी कामा का है। श्रीमती कामा का जन्म १४ सितम्बर, १८६१ और निधन ३० अगस्त, १९३६ को हुआ था। देश और विदेश में रहने वाले भारतीय क्रान्तिकारियों के साथ हमारे देश की आजादी के लिए श्रीमती कामा ने आजीवन अथक प्रयत्न किया था।

(४) ४ मार्च को स्वामी दयानन्द की स्मृति में भगवे रंग का एक विशेष टिकट निकाला गया, जिसपर स्वामीजी का चित्र और हस्ताक्षर अंकित हैं। स्वामीजी ने 'आर्यसमाज' की स्थापना की। वे आजीवन समाज-सुधार और शिक्षा-प्रसार के कार्यों में लगे रहे। सन् १८८३ की दीपावली के दिन उनका स्वर्गवास हुआ।

(५) २५ मार्च को स्वर्गीय गणेश शंकर 'विद्यार्थी' की पुण्य-स्मृति में लाल भूरे रंग का विशेष टिकट निकाला गया। १९३१ में कानपुर में हुए भीषण साम्प्रदायिक दंगे में हजारों निर्दोष हिन्दू-मुसलमानों की जान बचाता हुआ यह देशभक्त शहीद हो गया।

(६) ७ अप्रेल को विश्व स्वास्थ्य संघ की योजनानुसार 'मलेरिया' उन्मूलन आन्दोलन के सम्बन्ध में प्रकाशित डाक-टिकट पर पीले रंग में एक ग्लोब और उसके नीचे एक मच्छर का चित्र अंकित है। ऊपर की ओर 'मलेरिया के विरुद्ध सारा विश्व एक है' वाक्य अंग्रेजी में अंकित है।

(७) १३ मई को भारत के राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद अपने १२ वर्ष के पदभार से मुक्त हुए। इस अवसर पर निकाले गए गुलाबी रंग के टिकट पर डा० प्रसाद का चित्र और उनका कार्य-काल १९५०–१९६२ अंकित है।

(८) १ जुलाई को कलकत्ता हाईकोर्ट की शताब्दी के अवसर पर हलके हरे रंग का टिकट निकाला गया, जिसपर हाईकोर्ट की इमारत का चित्र मुद्रित है।

(९) ६ अगस्त को मद्रास हाईकोर्ट की शताब्दी के अवसर पर भी लाल भूरे रंग का टिकट निकाला गया।

(१०) १४ अगस्त को बम्बई हाईकोर्ट की शताब्दी मनाई गई। इस अवसर पर जारी किए टिकट का रंग स्लेटी है।

(११) १५ अगस्त को महाराष्ट्र की प्रसिद्ध समाजसेवी महिला स्वर्गीया रमाबाई रानाडे की स्मृति में भगवे रंग का विशेष डाक-टिकट निकाला गया। अनेक विरोधों के बावजूद श्रीमती रानाडे स्त्रीशिक्षा और स्त्रियों की स्थिति में सुधार के लिए जीवन-भर प्रयत्न करती रहीं।

(१२) वन्य पशु सुरक्षा सप्ताह के अवसर पर १ अक्टूबर को प्रकाशित टिकट पर आसाम में पाए जाने वाले दुर्लभ वन्य पशु गेंडे का चित्र अंकित है।

(१३) हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी बाल दिवस पर १४ नवम्बर को एक विशेष बहुरंगा डाक-टिकट निकाला गया। इस-पर एक प्रौढ़ हाथ द्वारा एक बालक हाथ को राष्ट्रीय ध्वज सौंपने का चित्र अंकित है। इसका आशय है कि आज का बालक ही कल का जिम्मेदार नागरिक बनेगा।

(१४) ७ दिसम्बर को दिल्ली में १९वाँ अन्तर्राष्ट्रीय नेत्र-रोग-विज्ञान सम्मेलन प्रारम्भ हुआ था, जिसमें ४४ देशों ने भाग लिया था। इस अवसर पर प्रकाशित टिकट गहरे जैतूनी भूरे रंग का है और इसपर कमल पुष्प में एक आँख का चित्र है।

(१५) इस वर्ष का अंतिम विशेष टिकट विश्वविख्यात गणितज्ञ श्री निवास रामानुजन की ७५वीं जन्म-तिथि पर २२ दिसम्बर को निकाला गया। स्वर्गीय रामानुजन एक ऐसी दिव्य प्रतिभा थे जिन्होंने केवल साढ़े इकत्तीस वर्ष की अल्पायु में ही विश्व-ख्याति अर्जित कर ली और इस नश्वर देह से मुक्त हो गए।

१९६३

१९६३ में भारतीय डाक-तार विभाग ने कुल १५ विशेष डाक-टिकट जारी किए। पहले के डाक-टिकटों से यदि हम इनकी तुलना करें तो हमें एक भेद साफ दिखाई देगा। वह यह है कि इस वर्ष के सभी डाक-टिकटों पर 'इंडिया' के साथ छपने वाले अंग्रेजी शब्द 'पोस्टेज' को हटा दिया गया है और उसकी जगह हिन्दी में 'भारत' शब्द अंकित किया गया है। जिन विशेष अवसरों पर ये डाक-टिकट निकाले गए, उनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

(१) इस वर्ष का सबसे पहला विशेष टिकट स्वामी विवेकानन्द की जन्म शताब्दी के अवसर पर दिनांक १७ जनवरी, १९६३ को निकाला गया। स्वामी विवेकानन्द का जन्म दिनांक १२ जनवरी, १८६३ को हुआ था। सन् १८९७ में उन्होंने रामकृष्ण-मिशन की स्थापना की, जिसके अनेक केन्द्र आज देश और विदेश में सफलतापूर्वक काम कर रहे हैं। ४ जनवरी, १९०२ को ३९ वर्ष की अल्पायु में उनका देहान्त हो गया। १५ नये पैसे के इस टिकट का रंग भगवा है। इस पर स्वामी विवेकानन्द का चित्र और हस्ताक्षर अंकित है।

(२) विदेशी डाक-दरों में परिवर्तन हो जाने के कारण दिनांक २ फरवरी, ६३ को रु० १.०३ वाले एक पूर्व-प्रकाशित टिकट को ही रु० १.०० के परिवर्तित मूल्य से पुनः प्रकाशित किया गया। मूलरूप में यह टिकट कालिदास जयन्ती के शुभ अवसर पर दिनांक २२ जून, १९६० को प्रकाशित किया गया था। भूरे और पीले रंग में छपे इस टिकट पर जो चित्र है उसमें शकुन्तला दुष्यन्त को पत्र लिखती हुई दिखाई गई है। स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद परिवर्तित मूल्य में पुनः प्रकाशित होने वाला यह पहला टिकट है।

(२) राष्ट्र संघ के खाद्य और कृषि संगठन के मुख्य संचालक

डा० बी० आर० सेन के निर्देश पर भूख निवारण आन्दोलन की ओर समृद्ध देशों की जनता का ध्यान आकर्षित करने के लिए अनेक देशों ने २१ मार्च १९६३ को विशेष डाक-टिकट प्रकाशित किए। इस अवसर पर भारतीय डाक-तार विभाग ने १५ नये पैसे मूल्य का नीला सलेटी रंग का टिकट प्रकाशित किया, जिसपर विश्व खाद्य एवं कृषि संघ का चिह्न गेहूँ की बालें और उसे प्राप्त करने के लिए उठे हुए बच्चों के अनेक छोटे-छोटे हाथ हैं।

(४) अन्तर्राष्ट्रीय रेडक्रास के शताब्दी समारोह के अवसर पर १५ नये पैसे मूल्य का एक सलेटी रंग का टिकट निकाला गया। इस टिकट पर रेडक्रास के संस्थापक स्विटजरलैंड निवासी डा० हेनरी ड्यूने का चित्र और लाल रंग में रेडक्रास का चित्र अंकित है।

(५) चीनी आक्रमण के समय हमारे वीर सैनिकों द्वारा किए गए राष्ट्र-सुरक्षा प्रयत्नों के सम्मान में स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर १५ अगस्त, ६३ को दो विशेष डाक-टिकट प्रकाशित किए गए। १५ नये पैसे मूल्य का प्रथम डाक-टिकट जैतूनी हरे रंग में छपा है और उसपर पहाड़ी पर तोपें चढ़ाए जाने का चित्र है।

(६) इस जोड़े का दूसरा टिकट लाल भूरे रंग का है और रु० १.०० मूल्य का है। इसमें सुरक्षा के लिए तैयार एक सशस्त्र सैनिक का चित्र है, जिसके समीप ही कुछ सैनिक छतरियाँ उतरती दिखाई दे रही हैं। इससे यह प्रकट होता है कि हमारे सैनिक ऐसे विषम स्थलों पर रह रहे हैं जहाँ आवश्यक सामग्री पहुँचाने के लिए छतरियों का प्रयोग करना पड़ता है।

(७) दादाभाई नौरोजी की जन्म-तिथि पर दिनांक ४ सितम्बर, ६३ को एक विशेष टिकट निकाला गया। १५ नये पैसे मूल्य का टिकट जैतूनी स्लेटी रंग में छापा गया है, जिसपर

नौरोजी का चित्र व हिन्दी और अंग्रेजी में उनका नाम अंकित है। उनका जन्म ४ सितम्बर १८२५ को एक पारसी पुरोहित के परिवार में हुआ था। वे जीवन-भर विभिन्न परिषदों और विधान सभाओं के सदस्य के रूप में काम करते रहे। कांग्रेस के संस्थापकों में उनकी गणना की जाती है। वह दो बार कांग्रेस के अध्यक्ष भी चुने गए। सन् १९१७ में ९२ वर्ष की आयु में उनका देहावसान हुआ।

(८) श्रीमती एनीबिसेंट के ११६वें जन्मदिवस के अवसर पर पहली अक्टूबर, १९६३ को एक विशेष डाक-टिकट निकाला गया। १५ नये पैसे के नीले-हरे इस टिकट पर श्रीमती एनीबिसेंट का चित्र और नाम अंकित है। श्रीमतो एनीबिसेंट का जन्म १ अक्टूबर, १८४७ को इंगलैण्ड में हुआ था। (प्रकाशित टिकटों पर जन्म सन् भूल से १८३७ छपा है) सन् १९१७ के कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन की वह अध्यक्षा चुनी गई। इस महान महिला का देहान्त ८६ वर्ष की आयु में दिनांक २० सितम्बर, १९३३ को हुआ।

(९)–(१३) वन्य पशु सुरक्षा सप्ताह के अवसर पर इस वर्ष ७ अक्टूबर, ६३ को ५ डाक-टिकटों की एक विशेष माला प्रकाशित की गई। ये टिकट १०, १५, ३०, ५० और १०० नये पैसे के हैं, जिनपर क्रमशः गोर (भारतीय बिशन), हिमालियन पंडा, हाथी, चीते और सिंह का चित्र अंकित है। दो रंगों में छपे टिकट विदेशी मित्रों के लिए अमूल्य उपहार सिद्ध होंगे।

(१४) 'बाल दिवस' १४ नवम्बर, ६३ को एक विशेष डाक-टिकट प्रकाशित किया गया। भूरे रंग में छपे १५ नये पैसे के इस टिकट पर बाल कल्याण योजना सम्बन्धी एक चित्र है, जिसमें एक अध्यापिका बच्चों को दूध बाँटते हुए दिखाई गई है।

(१५) मानव अधिकार दिवस की १५वीं वर्षगाँठ पर दिनांक १० दिसम्बर, १९६३ को बैंगनी रंग का टिकट निकाला गया

जिसपर श्रीमती एलीवर .रूजवेल्ट चरखा चलाते हुए दिखाई गई हैं। १९४६ में राष्ट्रसंघ द्वारा स्थापित मानव अधिकार कमीशन की वे अध्यक्षा थीं। श्रीमती रूजवेल्ट का यह चित्र १९५२ का है जब वह भारत-यात्रा पर आई हुई थीं।

१९६४

इस वष भारतीय डाक-तार विभाग ने कुल १६ विशेष डाक-टिकट प्रकाशित किए। इनमें से केवल चार को छोड़कर शेष बारह किसी न किसी महापुरुष या महान नारी की स्मृति में जारी किए गए हैं। सुभाष बोस के एक टिकट के अलावा इस वर्ष के सभी टिकट १५ पैसे मूल्य के हैं। इनमें से जून के बाद छापे गए टिकटों पर केवल ०·१५ का अंक ही छापा गया है—उसके साथ नये पैसे या पैसे शब्द नहीं है। जिन विशेष अवसरों पर ये टिकट निकाले गए उनका विवरण इस प्रकार है—

(१) पहला टिकट ४ जनवरी को नई दिल्ली में होने वाले प्राच्य विद्या-विशारदों के २६वें विश्व सम्मेलन के अवसर पर निकाला गया। इस टिकट का रंग नीला है, जिसपर एक सुन्दर नारी-मूर्ति अंकित है। यह सम्मेलन एक सप्ताह तक चला, जिसमें ५५ देशों के लगभग १३९० विद्वानों ने भाग लिया। इसमें पढ़े गए ८१७ शोध-पत्रों में से ५०० भारत के सम्बन्ध में थे। इस प्रकार का सबसे पहला अधिवेशन ९० वर्ष पूर्व पेरिस में और गत अधिवेशन १९६० में रूस में हुआ था।

(२) भुवनेश्वर के समीप गोपबंधु नगर में होने वाले भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के ६८वें अधिवेशन के अवसर पर ४ जनवरी को ही इस वर्ष का दूसरा टिकट निकाला गया। इसपर उत्कल-मणि पं० गोपबन्धुदास का चित्र है। उनका जन्म ९ अक्टूबर,

१८७७ को पुरी जिले के सुआड़ा ग्राम में हुआ था। उनका सारा जीवन उड़ीसावासियों में राष्ट्रीय चेतना जगाने में बीता। १९२८ की लाहौर कांग्रेस से लौटते समय वह बीमार हुए और उसी वर्ष १७ अप्रेल को उनका देहान्त हो गया।

(३) कन्नड़ के भक्तकवि संत पुरंदरदास की ४००वीं पुण्य तिथि के अवसर पर १४ जनवरी को भगवे रंग का टिकट निकाला गया, जिसपर उनका पूरा चित्र है। युवावस्था में मध्वमत में दीक्षित होकर उन्होंने अपने सरस पदों द्वारा कर्नाटक में वैष्णव धर्म का प्रचार किया। मीरा और सूरदास की तरह इनके पद कर्नाटक के घर-घर में गाए जाते हैं। इनका देहान्त आज से ४०० वर्ष पूर्व सन् १५६४ में हुआ था।

(४), (५) नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की ६७वीं जन्म-तिथि पर दिनांक २३ जनवरी को १५ और ५५ पैसे के दो टिकट निकाले गए। पहला टिकट खाकी रंग का है, जिसपर सुभाष बाबू का चित्र और आजाद हिन्द फौज का निशान अंकित है। दूसरा टिकट लाल और काले रंग में छापा गया है, जिसपर नेताजी और भारतीय झंडा लिए आजाद हिंद फौज का चित्र है। भारत से अंग्रेजी राज्य को हटाने के लिए विदेशों में आजाद हिंद सरकार और आजाद हिंद फौज का संगठन करने वाले नेताजी का जन्म २३ जनवरी, १८९७ को कटक में हुआ था। इनके पिता का नाम जानकीनाथ और माता का नाम प्रभावती था। आई० सी० एस० पास होकर वे जीवनभर स्वतन्त्रता आन्दोलन में लगे रहे। कहा जाता है कि १८ अगस्त, १९४५ को एक वायुयान दुर्घटना में उनका देहान्त हुआ था।

(६) भारत-कोकिला श्रीमती सरोजनी नायडू के जन्मदिन पर १३ फरवरी को एक लाल, बैंगनी और सलेटी रंग का टिकट निकाला गया। श्रीमती नायड का जन्म १३ फरवरी, १८७९ को

हैदराबाद के एक बंगाली ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके पिता डा० अघोरनाथ चट्टोपाध्याय अनेक भाषाओं के पंडित और इनकी माता श्रीमती वरदा सुन्दरी एक विदुषी महिला थीं। बारह वर्ष की आयु में इन्होंने मद्रास विश्वविद्यालय की मैट्रिक परीक्षा पास कर ली। कविता करना तो इन्होंने इससे पहले ही शुरू कर दिया था। इनकी प्रतिभा से प्रभावित होकर निजाम ने विशेष अध्ययन के लिए इन्हें इंगलैण्ड भेज दिया। भारत लौटने पर सन् १८६८ में इनका विवाह हैदराबाद के प्रधान चिकित्सा-अधिकारी श्री गोविन्द राजुलु नायडू से हुआ। १९१५ में वह कांग्रेस में शामिल हुईं तब से भारत के आजाद होने तक वह बराबर समाजसेवा के कामों में लगी रहीं। स्वतन्त्रता के बाद वह उत्तरप्रदेश की राज्यपाल बनीं, जहाँ उनका देहान्त २ मार्च, १९४९ को हुआ।

(७) महात्मा गाँधी की धर्मपत्नी श्रीमती कस्तूरबा की पुण्य-तिथि पर ताम्र-वर्ण टिकट निकाला गया। बा का जन्म अप्रेल, १८६९ में हुआ था। उनके पिता का नाम गोकुलदास और माता का नाम वृजकुँवर था। गांधीजी के साथ उनका विवाह १३ वर्ष की आयु में हो गया था। १८९६ में वह गाँधीजी के साथ अफ्रीका गईं, जहाँ उन्हें अफ्रीका की प्रथम महिला सत्याग्रही के रूप में जेल जाने का अवसर मिला। इसके बाद वह लगातार बापू के साथ-साथ राष्ट्रीय आन्दोलनों में भाग लेती रहीं। २२ फरवरी, १९४४ को आगाखाँ महल में उनकी मृत्यु हुई, जहाँ वह नजरबन्द थीं।

(८) डा० वाल्डेमर मॉरडेकाई हैफकिन की जन्म-तिथि के अवसर पर १६ मार्च, ६४ को एक पीले भूरे रंग का सुन्दर टिकट प्रकाशित किया गया। डा० हैफकिन का जन्म १५ मार्च, १८६० को रूस के ओडेसा नगर में हुआ था। इनके पिता का नाम ऐरो हैफकिन था। ब्रिटिश सेवा में शामिल होकर वह १८८९ में कृमिशास्त्री के

रूप में भारत आए, जहाँ उन्होंने प्लेग और हैजे की रोकथाम के सम्बन्ध में बहुत सी खोजें की। उनके द्वारा स्थापित प्रयोगशाला ही आज बम्बई की विश्वविख्यात हैफकिन्स संस्था कहलाती है। डा० हैफकिन का देहान्त २६ अक्टूबर, १९३० को हुआ।

(९) स्वर्गीय नेहरू की वसीयत के अनुसार १२ जून, १९६४ को उनकी भस्मी वायुयानों द्वारा सारे देश के खेतों में बिखेरी गई। इस अवसर पर नीले रंग का एक सुन्दर डाक-टिकट निकाला गया। इसपर नेहरूजी की प्रसन्न मुद्रा और पृष्ठभूमि में विशाल जन समूह अंकित है, जो उनकी लोकप्रियता का प्रतीक है।

(१०) प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री और न्यायविशारद सर आशुतोष मुकर्जी की जन्म शताब्दी के अवसर पर दिनांक २९ जून, १९६४ को गहरे भूरे रंग का टिकट निकाला गया। गणित में एम० ए० और कानून में डाक्टर की उपाधियाँ प्राप्त कर पहले वह वकील और बाद में कलकत्ता हाईकोर्ट के जज बने। आप बंगाल विधान परिषद के सदस्य भी रहे। १९२४ में ६० वर्ष की आयु में आपका देहावसान हुआ।

(११) महर्षि अरविंद की जन्म-तिथि पर १५ अगस्त को लाल भूरे रंग का टिकट निकाला गया। श्री अरविंद घोष का जन्म १५ अगस्त, १८७२ को कलकत्ते में हुआ था। उन्होंने इंगलैंड में १८९० में आई० सी० एस० की परीक्षा पास की। भारत आकर आप १३ वर्ष तक बड़ौदा राज्य की सेवा में रहे। बाद में वह बंगाल नेशनल कॉलेज, कलकत्ता के प्रिंसीपल रहे। सन् १९१० में राजनीति से अलग होकर पांडिचेरी चले गए और योगसाधना में लग गए। ४ दिसम्बर, १९५० को इस महान योगी ने अपना भौतिक शरीर छोड़ा।

(१२) प्रसिद्ध समाज-सुधारक राजा राममोहन राय की १९२वीं जन्म-तिथि के अवसर पर दिनांक २७ सितम्बर को हीरक

आकार का एक विशेष टिकट निकाला गया। इस आकार में निकलने वाला भारत का यह सबसे पहला टिकट है। राममोहन राय अनेक भाषाओं के विद्वान थे। सन् १८१३ तक वे राजकीय सेवा में रहे। उससे मुक्त होकर आपने ब्रह्म समाज की स्थापना की। सती-प्रथा और बहु-विवाह का आपने जबर्दस्त विरोध किया। १८३० में आप इंगलैंड और फ्रांस गए। वहीं ब्रिस्टल में २७ सितम्बर १८३३ को आपका देहांत हुआ।

(१३) अन्तर्राष्ट्रीय मानक संस्था का छठा अधिवेशन नवम्बर से २३ नवम्बर तक दिल्ली में हुआ, जिसमें ३४ देशों के लगभग ५०० प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस अवसर पर ९ नवम्बर को गहरे गुलाबी रंग का एक विशेष टिकट प्रकाशित किया गया।

(१४) प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी बाल-दिन के अवसर पर १४ नवम्बर को एक टिकट निकाला गया। आसमानी रंग के इस टिकट पर बच्चों के प्यारे चाचा नेहरू की याद में जारी किए गए सिक्के का चित्र है।

(१५) कैथोलिक ईसाइयों के धर्मगुरू पोप पाल षष्ठ के भारत आगमन के अवसर पर २ दिसम्बर को बैंगनी लाल रंग का टिकट निकाला गया। इसपर संत टामस का चित्र अंकित है। संत टामस भारत में आने वाले पहले ईसाई प्रचारक थे। १९०० वर्ष पूर्व सन् ६४ से ६८ के बीच उनका देहान्त मायला (मद्रास) में हुआ था।

(१६) इस वर्ष का अन्तिम टिकट २२वें अन्तर्राष्ट्रीय भूगोल सम्मेलन के अवसर पर दिनांक १४ दिसम्बर को निकाला गया। इस सम्मेलन में १०० देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। हरे रंग में छपे इस टिकट पर ग्लोब का चित्र है।

१९६५

इस वर्ष भारतीय डाक-तार विभाग ने केवल १३ विशेष डाक-टिकट प्रकाशित किए जिनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

(१) इस वर्ष का सबसे पहला टिकट भारत के महान उद्योग-पति स्वर्गीय जमशेदजी टाटा की १२५वीं जन्मतिथि पर ९ जनवरी को निकाला गया। यह टिकट गहरे भूरे और नारंगी रंग का है, जिसपर टाटा का चित्र अंकित है। जमशेदजी टाटा का जन्म बड़ौदा के एक प्रसिद्ध पारसी पुरोहित परिवार में सन् १८३९ में हुआ था। बम्बई के प्रसिद्ध एल्फिंस्टन कॉलेज में शिक्षा पूरी करके वे अपने पिता नौशेरवाँ जी के व्यापार में हाथ बँटाने लगे। जमशेदजी ने अपने जीवन काल में अनेक औद्योगिक संस्थाओं और शिक्षण-संस्थाओं की नींव डाली, जिसमें जमशेदपुर स्थित टाटा लोह व इस्पात उद्योग, बम्बई की टाटा जल विद्युत कम्पनी तथा बंगलौर का भारतीय वैज्ञानिक संस्थान विख्यात हैं। बम्बई का सुप्रसिद्ध ताज-महल होटल भी जमशेदजी ने ही बनवाया था। इस अथक परिश्रमी और उद्योगशील महापुरुष की मृत्यु सन् १९०४ में हुई।

(२) पंजाबकेसरी लाला लाजपतराय की जन्म शताब्दी के अवसर पर २८ जनवरी को गहरे भूरे रंग का टिकट निकाला गया, जिसपर लालाजी का चित्र अंकित है। लाला लाजपतराय का जन्म २८ जनवरी, १८६५ को अपनी ननिहाल ढोड़ी ग्राम (पंजाब) में हुआ। आपके पिता का नाम राधाकिशन था। अपनी शिक्षा पूरी करने के पश्चात् आप कुछ समय के लिए वकील और शिक्षक रहे। आपने समाजसेवा के अनेक कार्य किए, जिनमें शिक्षा-संस्थाओं और अनाथालयों की स्थापना, अछूतोद्धार और स्वदेशी आन्दोलन प्रमुख हैं। आप आर्यसमाज, हिन्दू महासभा और कांग्रेस के सक्रिय कार्य-

कर्ता रहे। इसलिए १९२० में कांग्रेस और १९२५ में हिन्दू महासभा के कलकत्ता अधिवेशनों के लिए अध्यक्ष बनाए गए। भारत की स्वतन्त्रता के लिए आपने इंगलैंड, अमेरिका, जापान आदि देशों में भी कार्य किया। पंजाब में सायमन कमीशन के विरुद्ध प्रदर्शन में आप पुलिस की लाठियों से घायल हो गए, जिससे कुछ दिनों पश्चात् १७ नवम्बर, १९२८ को लाहौर में आपका देहान्त हो गया।

(३) इस वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय वाणिज्य संघ का २०वाँ अधिवेशन नई दिल्ली के विज्ञान भवन में प्रसिद्ध उद्योगपति डा० भरत राम की अध्यक्षता में हुआ, जिसमें ४५ देशों के१०००से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस अवसर पर दिनांक ८ फरवरी को जैतूनी हरे रंग का विशेष डाक-टिकट निकाला गया, जिसपर विश्व का मानचित्र और लाल अक्षरों में आई० सी० आई० अंकित है।

(४) द्वितीय राष्ट्रीय नौवहन दिवस के अवसर पर ५ अप्रैल को गहरे नीले रंग का टिकट निकाला गया। इसपर भारत में बने सर्वप्रथम जहाज 'जल उषा' को विशाखापत्तनम् बंदरगाह में खड़ा दिखाया गया है। यह जहाज १९४८ में बनकर तैयार हुआ था। अब तक भारत में ऐसे २७ जहाज बनाए जा चुके हैं।

(५) अमेरिका की गुलामी-प्रथा को समाप्त करने वाले राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन की मृत्यु शताब्दी के अवसर पर १५ अप्रैल को पीले और बैंगनी लाल रंग का विशेष टिकट निकाला गया, जिस पर लिंकन का चित्र अंकित है। लिंकन का जन्म १२ फरवरी,१८० को एक गरीब किसान परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम टामस लिंकन, माता का नाम नेन्सी हेक्स और पत्नी का मेरी टॉ था। बचपन से ही परिश्रमी लिंकन अपनी प्रतिभा के बल पर स १८६० में अमेरिका के राष्ट्रपति बने। अपने एक घोषणापत्र द्वारा १ जनवरी, १८६३ को लिंकन ने अमेरिका के ४० लाख गुलामों को

मुक्त कर दिया। इसके लिए लिंकन को भीषण गृहयुद्ध का सामना करना पड़ा। विद्रोहियों की पूर्ण पराजय के ५वें दिन १४ अप्रेल, १८६५ को नाटक देखते समय नाटकघर में ही उनको गोली मार दी गई, जिससे दूसरे दिन प्रातः उनका देहान्त हो गया।

(६) अन्तर्राष्ट्रीय दूर संचार संघ की शताब्दी के अवसर पर १७ मई को लाल बैंगनी रंग का टिकट निकाला गया, जिसपर दूर-संचार साधनों की ध्वनि-तरंगों का चित्र है। इस संघ की स्थापना १०० वर्ष पूर्व १७ मई, १८६५ को हुई थी। उस समय २० यूरोपीय देश इसके सदस्य बने। भारत सन् १८६९ में इसका सदस्य बना। इस संघ का प्रथम अधिवेशन सन् १९०६ में बर्लिन में हुआ था। १९४७ में इसे संयुक्त राष्ट्र संघ की एक विशेष एजेन्सी बना दिया गया। इस समय इसके १२८ सदस्य हैं। इस संस्था का प्रमुख कार्य टेलीग्राफ, टेलीफोन, रेडियो संचार उपग्रह आदि से सम्बन्धित अन्तर्राष्ट्रीय नियम तैयार करना है।

(७) स्वर्गीय पंडित जवाहर लाल नेहरू की प्रथम बर्सी पर २७ मई को नीले और लाल रंग वाला एक दुरंगा टिकट प्रकाशित किया गया, जिसपर जवाहर-ज्योति और गुलाब के फूल का चित्र है। नेहरू जी के मृत्यु-दिवस पर जलाई गई यह ज्योति देश के विभिन्न भागों का दौरा कर ठीक एक वर्ष बाद इसी दिन राजधानी वापिस पहुँची थी।

(८) संयुक्त राष्ट्र संघ की ओर से १९६५ का वर्ष संसार-भर में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग वर्ष के रूप में मनाया गया। इस उपलक्ष्य में २६ जून को हल्के भूरे रंग का एक विशेष टिकट निकाला गया, जिसपर गहरे हरे रंग में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा निर्धारित टहनियों के मध्य दो मिले हुए हाथों का चित्र है। अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग और सद्भावना बढ़ाने के लिए ऐसा वर्ष मनाने की प्रेरणा

संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा को स्वर्गीय पंडित नेहरू ने १० नवम्बर, ६१ को अपने एक भाषण द्वारा दी थी।

(६) भारतीय पर्वतारोही दल की अभूतपूर्व एवरेस्ट विजय पर १५ अगस्त को लाल बैंगनी रंग का टिकट निकाला गया, जिस पर तिरंगा झण्डा लिए दो पर्वतारोहियों का चित्र है। १९६० और १९६२ के दो असफल अभियानों के बाद यह भारतीय दल का प्रथम सफल अभियान था जिसमें इस दल के १९ सदस्यों में से ९ ने संसार के इस सर्वोच्च शिखर पर चढ़ने में सफलता पाई।

(१०) स्वर्गीय गोविंदवल्लभ पंत के ७८वें जन्म दिवस पर गहरे भूरे और हरे रंग का एक विशेष डाक-टिकट निकाला गया जिसपर पंतजी का चित्र अंकित है। पंत जी का जन्म १० सितम्बर, १८८७ को अल्मोड़ा जिले में हुआ था। इलाहाबाद में उच्च शिक्षा पूरी कर आपने १९०७ में वकालत शुरू की। साथ ही आप राजनीति में सक्रिय भाग लेने लगे। आप अनेक बार उत्तरप्रदेश की विधान सभा के सदस्य और यू० पी० कांग्रेस दल के नेता चुने गए। १ अप्रेल, १९४६ में आप उ० प्र० के मुख्यमन्त्री बने, परन्तु १९५५ में आपको केन्दीय मन्त्रीमण्डल में गृहमन्त्री बना दिया गया। इसी पद पर कार्य करते हुए आपका देहान्त ७ मार्च, १९६१ को दिल्ली में हुआ।

(११) सरदार बल्लभभाई पटेल की ९०वीं जन्मतिथि पर ३१ अक्टूबर, ६५ को लौह काले रंग का टिकट निकाला गया, जिस पर स्वर्गीय पटेल का चित्र है। सरदार पटेल का जन्म १८७५ में गुजरात के खेड़ा जिले के करमसद ग्राम में हुआ था। आपके पिता का नाम झवेर भाई और बड़े भाई का नाम विट्ठल भाई था। इंगलैंड से बैरिस्टरी पास करके आप गांधी जी से प्रभावित हो असहयोग आन्दोलन में कूद पड़े। १९२८ के बारडोली आन्दोलन का सफल नेतृत्व करने के कारण गांधी जी ने आपको सरदार की उपाधि दी

१९३१ में काँग्रेस के कराची अधिवेशन के आप अध्यक्ष बनाये गए। आजादी के बाद आप भारत के गृहमन्त्री बनाए गए। उस समय जिस कुशलता और दृढ़ता से आपने साम्प्रदायिक एकता कायम की वह भारतवासी कभी न भूल सकेंगे। इस 'लौहपुरुष' का स्वर्गवास १५ दिसम्बर, १९५० को हुआ।

(१२) देशसेवा में सर्वस्व न्योछावर कर देने वाले देशबन्धु चित्तरंजनदास के ९५वें जन्म दिवस पर ५ नवम्बर को गहरे भूरे रंग का टिकट जारी किया गया। स्वर्गीय दास ने स्वाधीनता संग्राम में महत्त्वपूर्ण योग दिया था।

(१३) इस वर्ष का अतिम विशेष डाक-टिकट 'मैथिल-कोकिल' महाकवि विद्यापति की स्मृति में १७ नवम्बर को निकाला गया। गहरे भूरे रंग में छपे इस टिकट पर विद्यापति का चित्र है। विद्यापति (१३५०-१४४० ई०) मैथिली के एक महान कवि थे।

१९६६

सन् १९६६ में भारतीय डाक-तार विभाग ने कुल १९ नए डाक-टिकट निकाले। इनमें से ६ पैसे, १० पैसे एवं १ रुपए मूल्यवाले ३ टिकट सामान्य थे। शेष १६ टिकट विशेष अवसरों एवं तिथियों की स्मृति में निकाले गए। ये विशेष टिकट १५ पैसे मूल्य वर्ग के हैं।

(१) पर्यटन को क्षेत्रीय स्तर पर बढ़ावा देने के लिए संगठित 'प्रशान्त क्षेत्रीय पर्यटन' संस्था के १५वें वार्षिक सम्मेलन के अवसर पर इस वर्ष १ टिकट २४ जनवरी को निकाला गया। भारत में यह सम्मेलन पहली बार हुआ, जिसका उद्घाटन केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण मन्त्री श्री राजबहादुर ने किया। सलेटी रंग में छपे इस टिकट पर सिकन्दरा (आगरा) में बने हुए अकबर के भव्य मकबरे का चित्र है।

(२) स्वर्गीय प्रधानमन्त्री श्रीयुत लालबहादुर शास्त्री की स्मृति में इस वर्ष का दूसरा विशेष टिकट २६ जनवरी को निकाला गया। काले रंग में छपे इस टिकट पर श्री शास्त्री का सुन्दर चित्र है। शास्त्री जी का जन्म २ अक्टूबर, १९०४ को मुगल सराय (उ० प्र०) के एक साधारण कायस्थ परिवार में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री शारदाप्रसाद एवं माता का नाम श्रीमती रामदुलारीदेवी था। आपकी शिक्षा सुप्रसिद्ध काशी विद्यापीठ में हुई, जहाँ से आपने प्रथम श्रेणी में दर्शनशास्त्र की शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण की। सन् १९२७ में आपका विवाह श्रीमती ललिता देवी से हुआ। राष्ट्रीय आन्दोलनों में भाग लेने के कारण शास्त्री जी को कई बार जेल जाना पड़ा। स्वतंत्रता के पश्चात् १९४७ में आप उत्तरप्रदेश के पुलिस व यातायात मन्त्री बनाये गए। उसके पश्चात् आपने केन्द्रीय रेल मन्त्री, संचार व संवाहन मन्त्री, वाणिज्य व उद्योग मन्त्री, स्व राष्ट्र मन्त्री जैसे महत्त्वपूर्ण पदों पर काम किया। नेहरू जी के देहावसान के पश्चात् आपको ९ जून, १९६५ को प्रधानमन्त्री बनाया गया। इसी पद पर १८ माह सफलतापूर्वक काम करने के पश्चात् ११ जनवरी, १९६६ की रात को ताशकन्द में आपका देहान्त हुआ था।

(३) शास्त्री जी द्वारा देश को दिए गए 'जय जवान, जय किसान' के जयघोष को स्थायी बनाने के लिए २६ जनवरी को ही 'जय जवान' शीर्षक से एक विशेष डाक-टिकट निकाला गया। बैंगनी रंग में छपे इस टिकट पर एक भारतीय सशस्त्र सैनिक का चित्र है।

(४) नवीं शताब्दी के विख्यात तमिल कवि केम्बर की स्मृति में गहरे हरे रंग का एक विशेष टिकट ४ अप्रेल को निकाला गया। इसपर महाकवि का हाथ जोड़े हुए खड़ा चित्र अंकित है। वाल्मीकि रामायण के आधार पर रची गई उनकी तमिल रामायण को आ

भी तमिल साहित्य का एक उत्कृष्ट महाकाव्य माना जाता है।

(५) प्रसिद्ध हरिजन नेता डा० भीमराव रामजी अम्बेडकर की स्मृति में दिनांक १४ अप्रेल, ६६ को बैंगनी रंग का टिकट निकाला गया। डा० अम्बेडकर (१८९१-१९५६ ई०) एक बहुपठित एवं विद्वान व्यक्ति थे। भारत का नया संविधान बनाने में आपने महान योग दिया। आपने देश की आर्थिक, राजनीतिक, और सामाजिक समस्याओं पर काफी पुस्तकें लिखी हैं।

(६) स्वतन्त्रता संग्राम के अमर सेनानी बाबू कुंवरसिंह की स्मृति में भगवे रंग का विशेष टिकट २३ अप्रेल को निकाला गया। बाबू कुंवरसिंह का जन्म सन् १७७७ में बिहार के होशंगाबाद जिले के जगदीशपुर ग्राम में हुआ था। १८५७ के स्वतंत्रता संग्राम में इनकी आयु ८० वर्ष की थी। फिर भी इन्होंने युद्धवेश धारण कर निरन्तर ८ माह तक अंग्रेजों से लोहा लिया। घायल अवस्था में आपका देहान्त २६ अप्रेल, १८५८ को जगदीशपुर में हुआ था।

(७) स्वर्गीय गोपालकृष्ण गोखले की जन्म शताब्दी के अवसर पर दिनांक ९ मई को पीले और भूरे रंग का एक सुन्दर दुरंगा टिकट प्रकाशित किया गया। महात्मा गोखले का जन्म ९ मई, १८६६ को कोल्हापुर में हुआ था। अपनी विलक्षण प्रतिभा के कारण केवल १९ वर्ष की आयु में बी० ए० परीक्षा उत्तीर्ण कर आप पूना के फर्गुसन कॉलेज में अंग्रेजी और गणित के प्राध्यापक हो गए। रानाडे से प्रभावित होकर सन् १८८९ में आप काँग्रेस में सम्मिलित हो गए। १९१५ में काँग्रेस के बनारस अधिवेशन के आप अध्यक्ष चुने गए। इसी वर्ष आपने भारत के सेवक समाज (सर्वेण्ट्स ऑफ इंडिया सोसायटी) की स्थापना की। इस महान राजनीतिज्ञ और देशभक्त का देहान्त १९ फरवरी, १९१५ को हुआ।

(८) हिन्दी साहित्य के युग-निर्माता आचार्य महावीरप्रसाद

द्विवेदी की १०२वीं जन्म-तिथि के अवसर पर १५ मई, १९६६ को खाकी रंग का टिकट निकाला गया। द्विवेदीजी (१८६४–१९३८ ई०) ने साहित्य की सेवा करने के उद्देश्य से नौकरी छोड़कर १९०३ से 'सरस्वती' पत्रिका का सम्पादन कार्य २० वर्षों तक किया। २१ सितम्बर, १९३८ को ७४ वर्ष की आयु में आपका देहावसान हुआ।

(९) पंजाबकेसरी महाराजा रणजीतसिंह की पुण्यतिथि पर दिनांक २८ जून को बैंगनी रंग का टिकट निकाला गया। महाराजा रणजीतसिंह का जन्म २ नवम्बर, १७८० को गुजरांवाला में हुआ था। उनके समय में सारा पंजाब छोटी-छोटी रियासतों में बँटा हुआ था। महाराजा रणजीतसिंह ने उन सबको अपनी दूरदर्शिता से एक सूत्र में बाँधा। दिनांक २८ जून, १८३९ को इस भारतीय नेपोलियन की मृत्यु हुई थी।

(१०) सन् १९६६ की सबसे भयंकर विमान दुर्घटना २४ जनवरी को आल्प्स के निकट हुई, जिसमें विमान में सवार ११७ व्यक्ति मारे गये। मृतकों में भारत के विख्यात परमाणु शक्ति विशेषज्ञ डा० भाभा भी थे। डा० होमी जहांगीर भाभा की स्मृति में इसी वर्ष ४ अगस्त को एक विशेष टिकट निकाला गया। डा० भाभा का जन्म ३० अक्टूबर, १९०८ को एक सम्पन्न फारसी परिवार में हुआ था। बम्बई के एलफिस्टन कालेज में शिक्षा ग्रहण कर आप इंगलैंड चले गए थे, जहाँ कैंब्रिज विश्वविद्यालय से १९३४ में आपने पी० एच० डी० की उपाधि प्राप्त की। भारत लौटने पर पहले आप टाटा वैज्ञानिक अनुसंस्थान के संचालक बने और फिर बंगलौर के वैज्ञानिक अनुसंस्थान केन्द्र में पदार्थ विज्ञान के रीडर नियुक्त हुए। फिर ट्राम्बे अणुशक्ति संस्थान के निर्देशक नियुक्त किए गए। इसी पद पर कार्य करते हुए आपका आकस्मिक निधन हुआ।

(११) देश और विदेश में भारतीय दर्शन का ज्ञान-प्रकाश

फैलाने वाले स्वामी रामतीर्थ की स्मृति में दिनांक ११ नवम्बर को नीले रंग का हीरक आकार का सुन्दर टिकट निकाला गया। बालक तीर्थराम का जन्म २२ अक्टूबर, १८७३ को मुरलीवाला गांव में हुआ था। रामतीर्थ ने १८९५ में गणित में एम० ए० पास किया और लाहौर के क्रिश्चियन कालेज में प्राध्यापक हो गए। परन्तु हृदय में भक्तिभावना इतनी प्रबल थी कि वह घर-गृहस्थी छोड़कर १९०१ में संन्यासी हो गए और देश-विदेश में वेदान्त का प्रचार करने लगे। दिनांक १७ अक्टूबर, १९०३ को केवल ३३ वर्ष की आयु में ही वह इस नश्वर देह से मुक्त हो गए।

(१२) महान देशभक्त मौलाना अबुलकलाम आजाद की जन्मतिथि के अवसर पर दिनांक ११ नवम्बर को एक गहरे नीले रंग का टिकट निकाला गया। आपका जन्म ११ नवम्बर, १८८८ को मक्का शरीफ में हुआ था। १८९८ ई० में कलकत्ता आने पर इनको घर पर ही फारसी का अध्ययन कराया गया, फिर काहिरा के प्रसिद्ध 'अल अजहर' विश्वविद्यालय में भर्ती हो गए। वहाँ से भारत लौटे, तो उन्होंने देखा कि अंग्रेज सरकार भारतीयों की राष्ट्रीय भावना को दबाने का प्रयत्न कर रही है। १९२० में गांधीजी से मिलने के बाद आजाद कांग्रेस में शामिल हो गए। स्वतन्त्रता के पश्चात् आप भारत के शिक्षामन्त्री बन गए। आपका देहान्त २२ फरवरी, १९५८ को दिल्ली में हुआ।

(१३) नेहरू जी के जन्मदिन १४ नवम्बर को मनाए जाने वाले 'बाल दिवस' को गहरे गुलाबी रंग का एक सुन्दर टिकट निकाला गया, जिसपर शान्ति के प्रतीक कबूतर को देखते हुए एक हँसमुख बालक का चित्र अंकित है।

(१४) इलाहाबाद उच्च न्यायालय के शताब्दी समारोह के अवसर पर विशेष टिकट २५.११.६६ को निकाला गया।

(१५) परिवार नियोजन सप्ताह के अवसर पर १२ दिसम्बर को गहरे भूरे रंग का एक विशेष डाक-टिकट जारी किया गया, जिसपर एक छोटे-से किन्तु सुखी परिवार का चित्र अंकित है।

(१६) बैंकाक में हुए पांचवें एशियाई खेलों में विश्वविजेता भारतीय हॉकी टीम ने पाकिस्तान को १ गोल से हराकर एशियाई विजेता का सम्मान भी प्राप्त कर लिया। इस विजय की खुशी में ३१ दिसम्बर को इस वर्ष का सबसे अन्तिम टिकट निकाला गया। जिसपर हॉकी खेलते हुए खिलाड़ियों का चित्र अंकित है।

१९६७

भारतीय डाक-टिकटों के प्रकाशन की दृष्टि से १९६७ का वर्ष एक रेकार्ड वर्ष कहा जा सकता है। भारतीय डाक-तार विभाग ने इससे पूर्व किसी एक वर्ष में इतने नये टिकट नहीं निकाले। इस वर्ष कुल ३७ नये टिकट जारी किए गए। इनमें से ११ टिकट नियत टिकट माला के हैं, जिनका वर्णन चौथी नियत टिकट माला के अन्तर्गत किया गया है। इनके अलावा ९ नये टिकट सरकारी कामकाज के लिए निकाले गए। शेष १७ टिकट जिन विशेष अवसरों और महापुरुषों की यादगार में निकाले गए उनका वर्णन निम्नानुसार है—

(१) इस वर्ष का पहला विशेष डाक-टिकट 'जय किसान' स्वर्गीय लालबहादुर शास्त्री की प्रथम पुण्य तिथि के अवसर पर ११ जनवरी को निकाला गया। गहरे हरे रंग में छपे इस टिकट पर धान की नालियों सहित किसान और खेत का दृश्य अंकित है। १९६६ के 'जय जवान' टिकट के पूरक के रूप में यह टिकट निकाला गया।

(२) भारत में चौथे आम चुनाव १५ से २१ फरवरी, ६७ के बीच पूरे हुए। इनमें लगभग साढ़े बाईस करोड़ मतदाताओं ने ५२१

संसदीय तथा ३४४८ विधानसभाई प्रतिनिधियों को चुना। इस महत्त्वपूर्ण घटना की यादगार में १३ जनवरी ६७ को लाल भूरे रंग का विशेष टिकट निकाला गया, जिसपर एक मतदान केन्द्र और मतदान करती हुई एक महिला का चित्र अंकित है।

(३) सिक्खों के दसवें गुरु गोविन्दसिंह जी की ३००वीं जयंती के अवसर पर १७ जनवरी, १९६७ को नीले बैंगनी रंग का टिकट निकाला गया। इसपर पटना के उस गुरुद्वारे का चित्र है जहाँ गुरु-गोविन्दसिंह जी का सन् १६६६ में जन्म हुआ था। गुरु गोविन्दसिंह ने आजीवन औरंगजेब के अत्याचारों का मुकाबला करने की प्रतिज्ञा की थी। सन् १७०८ में सरहिंद के नवाब ने नंदेड नामक स्थान पर इन्हें धोखे से मरवा डाला। इस महान सन्त योद्धा का देहान्त केवल ४२ वर्ष की आयु में ही हुआ।

(४) इस वर्ष का चौथा विशेष टिकट अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन वर्ष के उद्घाटन के अवसर पर दिनांक १९.३.६७ को निकाला गया। इसपर भूरे और केसरिया रंग में ताजमहल का चित्र अंकित है। छपाई और रंगों की दृष्टि से यह इस वर्ष का सर्वश्रेष्ठ टिकट कहा जा सकता है।

(५) सुप्रसिद्ध भारतीय चित्रकार स्वर्गीय आचार्य नन्दलाल बोस की प्रथम पुण्यतिथि के अवसर पर दिनांक १६.४.६७ को भूरे रंग का एक विशेष डाक-टिकट निकाला गया, जिसपर आचार्य बोस के चित्र के साथ ही उनकी एक प्रसिद्ध कलाकृति 'गरुड़' का चित्र भी अंकित है। इस महान कलाचार्य का जन्म ३ दिसम्बर, १८८२ को एवं निधन १६ अप्रेल, १९६६ को ८४ वर्ष की आयु में हुआ था। ये भारतीय लोक जीवन के सशक्त चितेरे थे।

(६) इस वर्ष का छठा विशेष टिकट भारतीय सर्वेक्षण विभाग के द्विशताब्दी समारोह के अवसर पर १ मई, १९६७ को

निकाला गया। बैंगनी रंग में छपे इस टिकट के मध्य में 'सर्वे आ इण्डिया' का प्रतीक चिन्ह और चारों कोनों में क्रमशः विमान द्वा सर्वेक्षण, ग्लोब, भूसर्वेक्षरण एवं छपाई मशीन के चित्र अंकित है सन् १८५४ में भारत के सबसे पहले डाक-टिकट इसी विभाग द्वा छापे गए थे। संसार के सर्वोच्च शिखर एवरेस्ट की खोज और मा भी इसी विभाग ने की थी।

(७) बारहवीं सदी के महान संत बसवेश्वर के ८वें शताब्द समारोह के अवसर पर ११.५.६७ को भगवे रंग का टिकट निकाल गया। सन्त बसवेश्वर का जन्म मैसूर राज्य के बीजापुर जिले हुआ था। कन्नड़ भाषा में रचित इनकी रचनाएं 'वचन' कहलात हैं। इनका देहान्त सन् ११६७ में हुआ।

(८) गुजरात में भक्ति की नई लहर लाने वाले भक्त नरस महता की यादगार में ३०.५.६७ को हलके काले रंग का टिक निकाला गया। भक्त नरसिंह का जन्म १७वीं शताब्दी के प्रारम्भ जूनागढ़ के पास तलाजा ग्राम में हुआ था। इनके बनाए ७४० भक्ति और नीति के पदों का संग्रह 'श्रृंगार माला' के नाम से प्राप्त है महात्मा गाँधी का सर्वप्रिय भजन "वैष्णव जन तो तेने कहिए" इनका ही बनाया हुआ था।

(९) मेवाड़केसरी महाराणा प्रताप की स्मृति में दिनां ११ जून, १९६७ को लाल भूरे रंग का विशेष टिकट निकाला गया मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिए उन्हें आजीवन बादशाह अकबर जूझना पड़ा, किन्तु उन्होंने उसकी अधीनता स्वीकार न की।

(१०) केरल के महान सन्त एवं समाजसुधारक नाराय गुरु के ११२वें जन्मदिन के अवसर पर २१.८.६७ को गहरे भू रंग का विशेष टिकट जारी किया गया। नारायण गुरु ने केरल विभिन्न भागों में 'एक जाति, एक धर्म, एक ईश्वर' का संदेश फैला

तथा छूआछूत और जातिवाद का तीव्र विरोध किया। वह २० सितम्बर, १९२५ को समाधि में लीन हो गए।

(११) भारत के दूसरे राष्ट्रपति डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन् के ७९वें जन्म दिवस के अवसर पर दिनांक ५ सितम्बर, ६७ को भूरे बैंगनी रंग का टिकट निकाला गया। डा० राधाकृष्णन् का जन्म सन् १८८८ में मद्रास के समीप तिरूत्तणी गांव में हुआ था। शिक्षा समाप्त कर लगभग २० वर्षों तक मद्रास, मैसूर, कलकत्ता और ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालयों में प्राध्यापक के पद पर काम करते हुए आप सन् १९३१ में आंध्र विश्वविद्यालय और फिर बनारस वि० वि० के उपकुलपति नियुक्त किए गए। सन् १९४९ से ५२ तक रूस में भारत के राजदूत रहने के पश्चात् आपने १० वर्ष तक भारत के उप-राष्ट्रपति पद को सुशोभित किया। १९६२ में आप भारत के राष्ट्र-पति चुने गए और चतुर्थ आम चुनावों के बाद आप इस पद से मुक्त हुए।

(१२) १९४२ के 'भारत छोड़ो' आन्दोलन के २५ वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में प्रथम अक्टूबर, ६७ को गुलाबी लाल रंग का टिकट निकाला गया, जिसपर पटना के शहीद स्मारक का चित्र अंकित है। यह स्मारक पटना के उन सात शहीद छात्रों की यादगार है जो इस आन्दोलन के समय सचिवालय पर राष्ट्रीय झण्डा फहराने की कोशिश में गोलियों का शिकार हो गए।

(१३) 'भारत-योरोप तार लाइन' को सौ वर्ष पूरे होने पर एक नीले रंग का विशेष डाक-टिकट ९.११.६७ को जारी किया गया। इसपर लन्दन से कलकत्ता को मिलाने वाली ७,००० मील लम्बी तार लाइन का नक्शा बनाया गया है।

(१४) नई दिल्ली के नेशनल स्टेडियम में दिनांक १२ से १४ नवम्बर तक आयोजित सत्रहवीं विश्व कुश्ती प्रतियोगिता के अवसर

पर एक विशेष टिकट १२ नवम्बर, ६७ को प्रकाशित किया गया, जिस पर पीले भूरे और बैंगनी रंग में कुश्ती लड़ते हुए दो पहलवानों का चित्र अंकित है।

(१५) नागालैण्ड राज्य की स्थापना की चौथी वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में १ दिसम्बर, ६७ को समुद्री नीले रंग का एक विशेष टिकट निकाला गया। इसपर नागाओं के समूह के आगे नागा सिरोवेश तथा माला धारण किए चाचा नेहरू का सुन्दर चित्र अंकित है।

(१६) विख्यात क्रांतिकारी और प्रथम आजाद हिंद सेना के निर्माता स्वर्गीय रासबिहारी बोस की स्मृति में दिनांक २६ दिसम्बर, ६७ को लाल भूरे रंग का टिकट निकाला गया। श्री बोस का जन्म सन् १८८६ में चन्द्रनगर में हुआ था। आपने ही २३ दिसम्बर, १९१२ को तत्कालीन वायसराय लार्ड हार्डिग्ज पर बम फेंका था। इसके बाद वे फरार होकर १९१५ में जापान पहुँच गए, जहाँ १९२१ में उन्होंने आजाद हिंद लीग की स्थापना की। १९४३ में उन्होंने इसका कार्य भार नेताजी सुभाषचन्द्र बोस को सौंप दिया। २१.१.४४ को आपका देहान्त हो गया।

(१७) इस वर्ष का अंतिम टिकट विश्व स्काउट आन्दोलन की हीरक जयन्ती के अवसर पर दिनांक २७ दिसम्बर,६७ को निकाला गया। लाल भूरे रंग में छपे इस टिकट पर स्काउट बैज, बिगुल और ३ उंगलियों से सलाम करते हुए एक हाथ का चित्र अंकित है। इस अवसर पर २७ से ३० दिसम्बर तक कल्याणी में पंचम अखिल भारतीय स्काउट जम्बूरी हुई, जिसमें विभिन्न राज्यों के लगभग २६ हजार स्काउट एवं गाइड एकत्र हुए।

शासकीय सेवा-मालाएँ

सरकारी काम-काज के लिए जो डाक-टिकट जारी किए जाते हैं उनपर अंग्रेजी में सर्विस (SERVICE) अंकित होता है। आजादी के बाद ऐसी केवल ४ मालाएँ निकाली गईं। इन सभी पर अशोकस्तम्भ की डिजाइन ही अंकित है।

इस प्रकार की प्रथम माला १६५० में निकाली गई, जिसमें रुपयों वाले टिकट २-१-५० को और शेष १-७-५० को निकाले गए। प्रथम माला में कुल १३ टिकट थे। इनका मूल्य क्रमशः ३ पाई, ६ पाई, ६ पाई, १ आना, २ आना, ३ आना, ४ आना, ६ आना, ८ आना, १ रु०, २ रु०, ५ रु० एवं १० रुपये था।

(२) दूसरी माला मुद्रा की दशमलव प्रणाली अपनाई जाने के कारण १ अप्रेल, ५७ को जारी की गई। इसमें १ नये पैसे से लेकर ५० नये पैसे मूल्य तक के कुल १० टिकट थे, जिनका मूल्य क्रमशः १ नया पैसा, २ नये पैसे, ३ नये पैसे, ५ नये पैसे, ६ नये पैसे, १३ नये पैसे, १५ नये पैसे, २० नये पैसे, २५ नये पैसे, और ५० नये पैसे है।

(३) इसी दूसरी माला को, जलचिह्न बदल जाने के कारण

नये अशोकस्तम्भ के परिवर्तित जलचिन्ह वाले कागज पर छापा गया। ये सारे टिकट एकसाथ न निकाले जाकर १९५८ से ६३ के बीच निकाले जाते रहे। ऐसे कुल १५ टिकट हैं जिनका मूल्य क्रमशः १ नया पैसा, २ नये पैसे, ३ नये पैसे, ५ नये पैसे, ६ नये पैसे, १० नये पैसे, १३ नये पैसे, १५ नये पैसे, २० नये पैसे, २५ नये पैसे, ५० नये पैसे, १ रुपया, २ रु०, ५ रु० और १० रु० है।

(४) नये पैसे को पैसा कहे जाने के आदेशस्वरूप १९६७ में एक चौथी शासकीय माला निकाली गई, जिसपर अंग्रेजी सर्विस के साथ हिन्दी में पहली बार 'शासकीय' भी लिखा है। इस माला के अब तक कुल ९ टिकट निकल चुके हैं, जिनका मूल्य क्रमशः २ पैसे, ३ पैसे, ५ पैसे, ६ पैसे, १० पैसे, १५ पैसे, २० पैसे, ३० पैसे और पसे हैं।

इनके अतिरिक्त सन् १९४८ में गाँधीजी की स्मृति में छापे गए, टिकटों पर गवर्नर जनरल के उपयोग के लिए 'सर्विस' अधिमुद्रित किया गया था। ऐसे अधिमुद्रित टिकटों की संख्या थी— १½ आना १५९५०, ३½ आना १३५०, १२ आना २५० और १० रु० १००। कम संख्या में जारी किये जाने के कारण आज ऐसे असली टिकट बहुत मूल्यवान हैं। इनका वर्तमान मूल्य क्रमशः ८५ रु० १००० रु०, दो हजार रुपया और ६ हजार रुपया प्रति टिकट है।

सरकारी टिकटों के अतिरिक्त संयुक्त राष्ट्रसंघीय सेनाओं के रूप में विदेशों में तैनात हमारी सेनाओं के लिए भी विशेष अक्षरों से अधिमुद्रित भारतीय टिकट समय-समय पर जारी किए जाते रहे हैं। दुर्लभ होने के कारण उनका मूल्य भी वैसे सामान्य टिकटों से कई गुना अधिक रहता है।

27.8.80



...सामान नहीं देखा, ... "ओह मामा !" उसने एक दीर्घ उसांस छोड़ी —